SUNDAY SCHOOL SERIES.

गीत और भजन

N. I. T. S.

1875.

HINDI HYMN BOOK.

PRINTED AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS.

Hindi language.

North India Tract Society

Songs and Hymns collected for the North India Tract Sunday School.

गीत और भजन

जिस को

नार्थ इण्डिया ट्राक्ट सुसैटी ने सण्डे इस्कूलों

के लिये

संग्रह किया ।

Allahabad:

PRINTED AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS.

1875.

1st *Edition.*] [1500 *Copies.*

PREFACE.
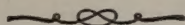
THIS book was prepared for the North India Tract Society by Rev. Aug. Brodhead, and Rev. T. S. Wynkoop. The hymns in English metres are for the most part taken from the *Zabúr aur Gít* of the American Presbyterian Mission; though a few hymns have been added from other sources. The hymns in Indian measures are from the well-known गीत संग्रह, सत्यशतक and अरुणोदय. So far as could be ascertained, the names of the Hindustání Melodies to which these latter should be sung are indicated with each hymn. Many of these melodies may be found in English notation in the Swár Sangrah. Tunes suitable for the peculiar English metres may be found in the *Zabúr aur Gít*, Edition with music. The 170th hymn is a translation of Hold the Fort, and the 174th of The Gates Ajar. The 173rd is Art thou Weary. The tune of the 171st may be found in the *Inṭ aur Roṛe ká Rágmálá.*

गीत की पुस्तक ॥
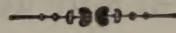
परमेश्वर की स्तुति ।
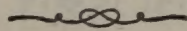
१ पहिला गीत ।

१ धन है परमेश्वर हे भाइयो धनबाद उस का गाओ
स्वर्ग के सब दूतों के राग में राग अपना मिलाओ
सब उस के मीत
छेड़ो बीन गाओ तुम गीत
प्रभु का भजन सुनाओ ॥

२ धन है परमेश्वर वह करता सब भला और अच्छा
अपनी निज आड़ लेके करता है तुम्हारी रक्षा
प्रभु दयाल
करता है नित प्रतिपाल
जानता तुम्हारी सब इच्छा ॥

३ धन है परमेश्वर अद्भुत उस ने तुम्हें बनाया
तुम्हें सुख चैन देके कृपा के मार्ग पर चलाया
किया उपकार
प्रभु ने तुम्हें बार बार
अपनी ही आड़ में छिपाया ॥

४ धन है परमेश्वर तुम्हारे वह घर का बरदाई
स्वर्ग पर से बर्षा सी कृपा पर कृपा बरसाई
भूलियो मत
प्रभु की सामर्थ्य की गत
प्रीत तुम पर कितनी दिखाई ॥

५ धन है परमेश्वर सब मिलके गुन प्रभु का गाओ
सब जिन को सांस है हमारे संग भजन सुनाओ
वह है जगमूल
मनुआ उसे मत भूल
गाके अस्तुत कहो आमीन ॥
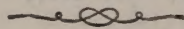
२ दूसरा गीत । 8, 7s.

१ हे परमेश्वर रक्षक मेरे
तेरा प्रेम मैं जानता हूं
पाया करता हूं दान तेरे
तेरा धन मैं मानता हूं ॥

२ भोजन वस्त्र तू ने दिया
दिया सब कुछ दीनदयाल
रक्षण मेरा तू ने किया
सदा रक्षण कर रखवाल ॥

३ सब कुछ मैं ने तुझ से पाया
तौभी तेरा किया पाप
अब मैं पापें से लजाया
उस से मुझे है सन्ताप ॥

४ प्रभु ईसा रुधिर तेरा
मुझे शुद्ध कर सक्ता है
मन पवित्र कर तू मेरा
करूंगा मैं तेरी जय ॥

३ तीसरा गीत । L. M.

१ यहोवाह है बरहक़ ख़ुदा
है ख़ालिक़ सारी दुनिया का
सब बुतपरस्तों के मअ़बूद
हैं बातिल होंगे नेस्त नाबूद ॥

२ कि जितने उन के बुत तमाम
हैं कारीगर के हाथ के काम
सिरफ़ धात और लकड़ी ठहरे हैं
और अन्धे गूंगे बहिरे हैं ॥

३ न बोलते वे ज़ुबानों से
न सुन्ते अपने कानों से
न आंख से देखते लखते हैं
कि आप में दम न रखते हैं ॥

४ जो जो उन्हें बनाते हैं
या पूजते या पुजवाते हैं
सो बुत की मानिन्द हैं ज़ुरूर
हक़ीर बे अ़क़्ल बे शऊ़र ॥

५ पर ऐ ख़ुदा के ख़ादिमो
तुम मानो सिरफ़ यहोवाह को
कलीसिया भर शागिर्द उस्ताद
कहें उस को मुबारकबाद ॥

४ चौथा गीत । L. M.

१ ख़ुदावन्द को ऐ मेरी जान
तू कह मुबारकबाद हर आन
जो मुझ में है सो कहे शाद
नाम उस का हो मुबारकबाद ॥

२ ख़ुदावन्द को ऐ मेरी जान
तू कह मुबारकबाद हर आन
तू उस की निअ़मतें न भूल
शुकराने में अब हो मशग़ूल ॥

३ मसीह की ख़ातिर से अल्लाह
मआ़फ़ करता तेरे सब गुनाह
और दुःख बीमारी से तमाम
वह तुझे देता है आराम ॥

४ हलाकत से वह तेरी जान
बचाता है हर ख़ौफ़ की आन
और शफ़क़त और रहमत का
ताज तुझ पर रखता है ख़ुदा ॥

५ वह देता है हर अच्छी चीज़
जो रूह ओ बदन को अज़ीज़
कि होती है तब तेरी जान
उक़ाब की मानिन्द नौजवान ॥

६ ऐ मेरे दिल ऐ मेरी जान
ख़ुदावन्द को हर रोज़ हर आन
तू कहे जा मुबारकबाद
और कर तअरीफ़ अबदुलआबाद

५ पांचवां गीत। 8, 7s.

१ ऐ ख़ुदा कमाल के चशमे
मुझ से अपनी हमद करवा
तेरी मिहर है लासानी
क़ाइम दाइम बे बहा
तेरा प्यार जो है निहायत
बे ज़वाल ला इन्तिहा
उस की मुझ से ऐ ख़ुदावन्द
अब तअरीफ़ का गीत गवा ॥

२ अबनअज़र तू मसीहा
हुआ मेरा मददगार
तेरे फ़ज़ल से मैं हूंगा
ग़म के इस दरया से पार
था मैं भूली भेड़ की मानिन्द
गल्ला छोड़ आराम बिदून
ईसा खोजने और बचाने
आया दिया अपना खून

३ उमर भर मैं गाता रहूं
तेरे फ़ज़ल की सिपास
अपने करम से खुदावन्द
रख तू मुझे अपने पास
तुझे भूलने को तो सदा
इमतिहान बहुतेरा है
मुहर कर तू मेरे दिल पर
अबद तक तू मेरा है ॥

६ छठवां गीत ।

या रब्ब तेरी जनाब में हर्गिज़ कमी नहीं
तुझ सा जहान के बीच तो कोई ग़नी नहीं
जो कुछ कि खूबियां हैं सो तेरी ही ज़ात में
तेरे सिवाय और तो कोई धनी नहीं

आसी की अर्ज़ तुझ से है तू सुन ले ऐ ग़नी
अपने फ़ज़्ल के गंज से तू कर मुझे धनी ॥

७ सातवां गीत।

खीष्ट महाप्रभु निज प्रभुता को
कत कत भांत दिखाई हो
जग डूबत निज दास बचावन
नौका झट बनवाई हो
नूह सुजन को तब निस्तारयो
दुष्टन तें अलगाई हो
निबुखदनिसर भयो अति कोपी
सन्तन अगिन फिंकाई हो
अगिन मध्य तिन संग फिरे प्रभु
बाल्हु नहिं मुरझाई हो
दनियल पर खल जन रिसियाने
सिंहन मांद पहुंचाई हो
सिंह मुख को प्रभु रोक्यो तबही
सेवक लीन्ह छुड़ाई हो
मोहि अधीन के खीष्ट भरोसा
जेहि प्रभुता अधिकाई हो
मेरी बार देर जनि कीजे
दीजे दोष दुराई हो ॥

८ आठवां गीत । सारंग

दीनदयाल सकल बर दाता
  दे यश गावन को उपदेशा
निथरे नीर अगाम नद नाईं
  तोर दया जल बहत हमेशा
यातें तन मन कुशल मिलत है
  धन्य जगतपालक परमेशा
शठ अपराधी नर तारन को
  सेवक को प्रभु लीयो भेषा
दीनन संग संकट पथ धारा
  क्रूश सहित सहि लाज कलेशा
निज जन अन्तर बिमल करन को
  है प्रभु तोहे शक्ति बिशेशा
तोर आत्मा गुण तिन चित में
  दिवस जोत सम करत प्रवेशा
तब यश मरत भुवन में होवे
  सरगभुवन जिमि होत अशेशा
आश्रित सुख निज भजन करावो
  टारि कुटिल मन दुर्मति लेशा ॥

९ नवां गीत । पूर्वी

यीशु नाम यीशु नाम
यीशु नाम गाउं रे
यीशु नाम गुनन धाम
धर्म ग्रन्थ ठाउ रे
रटत नाम पुरत काम
सत्य प्रेम भाउ रे
सूर उदित जलज मुदित
अस्तहि मुरझाउ रे
सन्त कमल नाम किरन
तैसही उगाउ रे
नाम अस्त्र शस्त्र नाम
युद्ध बुद्ध दाउ रे
त्रिबिध ताप जेहि दाप
सर्ब दूरि जाउ रे
सबहि हाल सबहि काल
भक्त शक्ति पाउ रे
जान अधम सोइ नाम
नरनि मुक्ति ठांव रे ॥

१० दसवां गीत । भैरो

जय प्रभु यीशू जय प्रभु यीशू
जय प्रभु यीशू स्वामी
जय जगत्राता जय सुखदाता
जय जय प्रभु अनुगामी
जय भयभंजन जय जनरंजन
जय पूरन सत कामी
पाप तिमिर घन नाशक तुमही
धरम दिवाकर नामी
कलिमल दूषन हरता तुमही
संकट बट सहगामी
नर तन धारि लियो अवतारा
तजि सुन्दर दिवधामी
दय निज प्रान उबारि लियो तुम
पापिन बहु दुरकामी
अस गुन तेरो कस मैं गावों
छन्द प्रबन्ध न ठामी
अटपटि टेरन जानक्ष सुनिये
पतित उधारन नामी ॥

११ एग्यारहवां गीत । चञ्चरी

तू भजि ले मन प्रेम सहित
यीशू गुरु स्वामी
धरन सकल जगत धीर
कलिक कलुख दलन बीर
रहत निकट हरन पीर
संकट सहगामी
दुखद सिन्धु अचल सेतु
नाम जेहि सतत हेतु
सुभग शरन जवन देतु
पूरन सतकामी
भ्रमित जनन धरनि देख
बपुख मनुख धरहि बेख
प्रेम जिहि न जातु लेख
करुना अनुपामी
गुनन तेहि अधम जान
रटहु जोरि जुगल पान
इतहि लहहि अमल ज्ञान
उतहि सुखद ठामी ॥

१२ बारहवां गीत ।

पापिन का हितकारी मसीहाजी ॥

बूड़त जगको देखि दयाला
सरग सिंहासन त्यागो
पापिन कारन प्रान दयो निज
अस पूरित अनुरागो
जय जय करत गोर से उठ्यो
देखिन ज्योत पसारो
सकल लोग चौदिशसे धावो
खीष्ट रुधिर गुणकारी
हरखित हो आवो सब प्यारो
खीष्ट नाम गहि लीजे
सब तन मनके क्लेश बिसारे
अमरित रस तब पीजे
खीष्ट नाम बहु बिध सुखदाई
गह्यो जिन सो पायो
घातक एक क्रूशपर टेरयो
सरगधाम सो धायो
मोर निवेदन सुनिये प्रभुजी
तिहि तुल मोको कीजे
मैं गुनहीन अधीन मसीहजी
तारि मोहि तौं लीजे ॥

१३ तेरहवां गीत। C. M.

१ इम्मानुएलके लोहू से
  एक सोता भरा है
जब उसमें डूबते पापी लोग
  रंग पापका छूटता है॥

२ वह डाकू क्रूशपर उसे देख
  आनन्दित हुआ तब
हम वैसे दोषी उसीमें
  पाप अपना धोवें सब॥

३ ईश्वरकी मंडली सदाकाल
  सब पापसे बच न जाय
तबतक उस अन्मोल रक्तका गुण
  न कभी होगा क्षय॥

४ मैं जबसे तेरे बहते घाव
  बिश्वाससे देखता हूं
मोक्षदाई प्रेमको गा रहा
  और गाऊंगा मरनेलों॥

५ और जब यह लड़बड़ाती जीभ
  कबरमें चुप रहे
तब तेरी स्तुति करूंगा
  और मीठे रागोंसे॥

परमेश्वर की ज़ात औ गुण ।
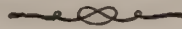
१४ चौदहवां गीत । 11s.

१ सुन ऐ मेरी आत्मा परमेश्वर को जान
अनाद और अनन्त भी और सर्बशक्तिमान
सर्बज्ञानी वह है और पवित्र अपार
और सब अपराध का है दंडदेनेहार ॥

२ अब जान तू हे पापी परमेश्वर है शुद्ध
और पापों के कारण है पापी पर क्रुद्ध
परलोक में वह करेगा महाबिचार
और पापी तब भुगतेगा पीड़ा अपार ॥

३ पर आवे जो जन प्रभु ईसा के पास
सो तरेगा निश्चय न होवेगा नाश
मसीहा के पुण्य से तब क्षय होगा पाप
और मिलेगी मुक्ति क्षय होगा सन्ताप ॥

१५ पन्द्रहवां गीत । 11s.

१ परमेश्वर के गावें हम गुण और धनबाद
वह है परमात्मा अनन्त और अनाद
स्वयंभू परमेश्वर अदृष्ट निराकार
है जगत का अधपत और सब का आधार

२ सृष्टिकर्त्ता सर्बरक्षक और सर्बशक्तिमान
सर्बज्ञानी पवित्र और न्याई महान
वह असम और अगम गुणसागर अपार
वह सब का है दाता और त्राणकरनेहार ॥

३ कौन प्रभु के भेद का कब हुआ सज्ञान
मसीहा से प्रगटा परमेश्वर महान
दयाल और कृपाल हो बचाने संसार
नररूप धारन करके वह हुआ अवतार ॥

४ पापमोचन और मुक्ति अब ईसा के हाथ
मुक्तखोजी को देता है बाप कृपानाथ
सो रक्खें हम ईसा पर मन से बिस्वास
प्रभु उस के द्वारा दे मुक्ति की आस ॥
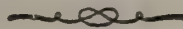
१६ सोलहवां गीत । L. M.

१ तू ऐ खुदा नादीद: है
सब आंखों से पोशीद: है
एक रूह कुद्दूस बेइब्तिदा
अज़ीम हकीम लाइन्तिहा ॥

२ जो जिस्म हैं सो टलेंगे
वे मरके सड़के गलेंगे
पर तेरी ज़ात गैरफ़ानी है
सब बातों में लासानी है ॥

३ जब तेरी नहीं है शबीह
तब किस से तेरी हो तशबीह
हम किस से तुझे दें मिसाल
कि तू बेशक्ल है ज़ुलजलाल ॥

४ ग़ैरक़ौमों के जो हैं खुदा
सो बुत बनावट हैं हर जा
पर तू यहोवाह ज़िन्द: है
सब का पैदाकुनिन्द: है

५ ऐ मेरी जान झुका तू सर
उस रूह जलील को सिजदा कर
खुदाया मुझे ताक़त दे
कि करूं रूह और रासती से ॥

१७ सत्रहवां गीत । 8, 7s.

१ ऐ खुदा तू मुझे जांचता
बिलकुल तू पहिचानता है
मेरा उठना मेरा बैठना
सब कुछ तू ही जानता है ॥

२ दूर से मेरे सब अन्देशः
देखके उन से है आगाह
मेरा सोना मेरा जागना
जानता तू सब मेरी राह ॥

३ राह में घर में बाहर भीतर
सब कुछ तुझ पर ज़ाहिर है
मेरे दिल की हर एक बात से
तू खुदाया माहिर है ॥

४ आगे पीछे घेरनेवाला
है हर जा तू मेरे साथ
औरों से गर हूं पोशीदः
मुझ पर नित है तेरा हाथ ॥

५ ऐसी हालत क्या अजूबः
अक़ल से वह बाहिर है
मेरा सारा हाल हक़ीक़ी
सब कुछ तुझ पर ज़ाहिर है ॥

६ मेरे दिल पर इस को नक़श कर
कि हर जा तू हाज़िर है
जो मैं बोलता सोचता करता
सब का तू ही नाज़िर है ॥

१८ अठारहवां गीत । 11s.

१ आसमान बयान करते खुदा का जलाल
और फ़ज़ा बताती है उस का कमाल
हां सुबह और शाम भी और दिन भी और रात
दिखाते अलक़ादिर खुदा की सिफ़ात ॥

२ न उन की ज़ुबान है न उन की आवाज़
पर तौ भी बजाते सिताइश का साज़
कि ख़िलक़त से ख़ालिक़ का होता बयान
वह क़ादिर ए मुतलक़ हकीम आली शान ॥

३ ज़मीन और आसमान पर है रब्ब का कलाम
कि सूरज और चांद और सितारे तमाम
पहाड़ औा समुन्दर मैदान औा दरया
सब कहते हैं ख़ालिक़ है क़ादिर खुदा ॥

४ देख दुल्हे की मानिन्द है सूरज तैयार
निकलता है पूरब से हो रौनक़दार
और पच्छिम को करता है गर्दिश तमाम
और छिपा है उस से न कोई मुक़ाम ॥

५ आसमान बयान करते ख़ुदा का जलाल
और फ़ज़ा बताती है उस का कमाल
हां सुबह और शाम भी और दिन भी और रात
दिखाते अलक़ादिर ख़ुदा की सिफ़ात ॥

बैबल अर्थात धर्म्म शास्त्र ।

१९ उन्नीसवां गीत । 7s.

१ बैबल है कलामुल्लाह
ज़ाहिर करता हक़्क़ की राह
हक़्क़ के मुतलाशों पर
हक़्क़ को करता जलवगार ॥

२ ग़ाफ़िल को जगाता है
फेर गुमराह को लाता है
रब्ब की बातें बोलता है
भेद नजात का खोलता है ॥

३ करता ख़ुश उदासों को
करता सेर वह प्यासों को
तीरगी को करता दूर
देखने को वह बख़शता नूर ॥

४ मुझे अपने रहम से
ऐ खुदा यह ताक़त दे
कि मैं दिल में रोशन हो
समझ लूं पाक बैबल को ॥

२० बीसवां गीत । C. M.

१ खुदाया तेरा पाक कलाम
हर वक्त़ मैं रक्खूं याद
कि तेरे सारे हुक्मों पर
है मेरा इ़तिक़ाद ॥

२ अमीरों से भी कहूंगा
मैं तेरे सुख़न को
शर्मिन्दः नहीं होऊंगा
जो दुःख भी सहना हो ॥

३ कलाम मुक़द्दस बिला शक्क
है मेरा दोस्त अज़ीज़
कि मुझे उस के हुक्मों से
हो जाती है तमीज़ ॥

४ इलाही तेरे फ़र्ज़ों पर
हर वक्त़ मैं करूं ध्यान
और दिलपसंद मुअ़ज्ज़ज़ हैं
सब तेरे पाक फ़रमान ॥

२१ इक्कीसवां गीत। S. M.

१ पांव मेरे का चिराग़
रब्ब तेरा है कलाम
वह राह के लिये रोश्नी है
हर हाल और हर ऐयाम ॥

२ तेरे कलाम से है
मेरी अबदी मीरास
और तेरी पाक शहादत से
है मुझे खुशी ख़ास ॥

३ दिल मेरा चाहता है
कि तेरे पाक फ़रमान
मैं बजा लाऊं कोशिश से
ता अबद हर ज़मान ॥

४ शुक्र और दुआयें
सो मेरे हैं कुरबान
क़बूल तू कर और मुझे बख़्श
अपने कलाम का ज्ञान ॥

प्रभु यसू ख्रीष्ट ।

२२ बाईसवां गीत । C. M.

१ ख़ुदा की सना गाते हैं
सब पाक फ़िरिश्त:गान
अब हम भी उन में मिलके हों
ख़ुदा के सनाख़्वान ॥

२ बर्र: सब हमद के लायक़ है
वे गा सुनाते हैं
बर्र: सब हमद के लायक़ है
हम मिलके गाते हैं ॥

३ सब जो ज़मीनी है गुरोह
आसमानी फौज शरीफ़
सब एक आवाज़ हो गावें अब
ख़ुदावन्द की तअरीफ़

४ हक़्क़ तआला को और बर्र: को
सब मिल बदिल ओ जान
हम सिजद: करते हैं इस वक़्त
और करें हर ज़मान ॥

२३ तेईसवां गीत। C. M.

१ खुदावन्द ईसा मालिक है
सुलतानों का सुलतान
सब चीज़ों का वह ख़ालिक़ है
ज़ात उस की आलीशान॥

२ इम्मानुएल है उस का नाम
खुदा हमारे साथ
अजीब हैं उस के सारे काम
नजात है उस के हाथ॥

३ इनसानों के बख़शाने को
इनसान वह हुआ था
और दु:ख और मौत उठाने को
वह दु:ख में मुआ था॥

४ वह मूमिनों का जौहर है
और मोती बे बहा
कलीसिया का वह शौहर है
और मुनजी दुनिया का॥

५ बाग़ मेरा उस से ताज़: है
वह है हयात का आब
बिहिश्त का वह दरवाज़: है
और रास्ती का आफ़ताब॥

२४ चौबीसवां गीत । 7s.

१ जितने होवें जग के बीच
छोटे बड़े ऊंच और नीच
बोलो धन मसीह सदय
बोलो सब मसीह की जय ॥

२ वह उतारने पाप का भार
खोलने को वह स्वर्ग का द्वार
देने पापियों को सुख
आया था कि सहे दुःख ॥

३ अपना लहू दिया है
अपना प्राण बल किया है
ईसा है सब ग्रहण जोग
जय जय करें सारे लोग ॥

४ भाई बोलो ईसा नाम
देखो सिद्ध है मुक्त का काम
बोलो सारे झूठ की क्षय
बोलो सब मसीह की जय ॥

२५ पच्चीसवां गीत। 7s.

१ मेरी जान तू कान लगा
सुन कलाम तू ईसा का
पूछता वह ऐ गुनहगार
क्या तू मुझ को करता प्यार॥

२ था तू क़ैद में नाउम्मैद
मैं ने खोली तेरी क़ैद
घायल था गुमराह लाचार
मैं तब हुआ मददगार॥

३ मा भी भूले बच्चे को
उस के दिल में प्यार न हो
लेकिन मुझे तेरी याद
होगी अबदुलआबाद॥

४ मेरा है बेबदल प्यार
मौत में भी है पाएदार
वह आसमान से ऊंचा है
और पाताल से नीचा है॥

५ देखेगा तू मेरी शान
जो अज़ीम है बेपायान
मेरे तख़्त के हिस्स:दार
क्या तू मुझ को करता प्यार॥

६ ईसा मेरा है इक़रार
अब तक कम है मेरा प्यार
ऐ मसीह खुदावन्दा
मेरे दिल में प्यार बढ़ा ॥

२६ छब्बीसवां गीत । 8, 7, 4s.

१ हे परमेश्वर तेरे मुख को
जो प्रताप में है अनूप
देखने को न शक्ति मनुष को
आत्मा है तू बिन स्वरूप
स्वर्ग के राजा
जग का तू है महाभूप ॥

२ उतरा तेरा पूत नाम ईसा
तुझे प्रगटाने को
आया प्रेम से जगदीसा
भ्रष्टों के बचाने को
हे परमेश्वर
तू हमारा त्राणी हो ॥

३ तेरे गुण का तेज फैलाने
जगत करने का उद्धार

जग का पाप सन्ताप मिटाने
ईसा आया इस संसार
कृपासागर
कर हमारा भी निस्तार ॥

४ काटने को हमारे दुःख को
ईसा तू ने पाया कष्ट
देने हमें धर्म्म और सुख को
जो शैतान से हुए भ्रष्ट
हां तू आया
पाप सन्ताप को करने नष्ट ॥

५ हमें ग्रहण कर हे प्रभु
मन कठोर हमारे तोड़
तू हम आश्रितों को कभू
दुःख के सागर में मत छोड़
मरणकाल तक
हम से अपना मुंह मत मोड़ ॥

२७ सत्ताईसवां गीत । 7s.

१ सुन आसमानी फौज शरीफ़
गाती है रब्ब की तअरीफ़
सुल्ह अब ज़मीन पर हो
खुशी बनी आदम को ॥

२ लो खुदा बरहक्क मअबूद
हुआ जिस्म में मौजूद
इबनुल्लाह जो आलीशान
है इनसानों में इनसान ॥

३ नया जन्म देने को
मौत से बचा लेने को
हां और खोलने को आसमान
उस ने छोड़ी अपनी शान ॥

४ ऐ सब क़ौमो खुशी से
गाओ साथ फ़िरिशतों के
कि बैतलहम में सहीह
पैदा हुआ है मसीह ॥
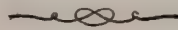
२८ अट्ठाईसवां गीत । L. M.

१ खुदा का देखो कैसा प्यार
मसीह अब हुआ है औतार
मुनज्जी हुआ है नमूद
और बैतलहम में है मौजूद ॥

२ खुदा मुजस्सिम क्या अजीब
तवल्लुद हुआ है ग़रीब
सब ख़िलक़त की जो असल है
सो औरत की अब नसल है ॥

३ यह बात क़ियास से बाहिर है
तौभी सरीह और ज़ाहिर है
कि चरनी में जो है मौजूद
सारे जहान का है मअ़बूद ॥

४ गर तुझे जानें लोग नाचीज़
मसीह तू मुझे है अज़ीज़
कर मेरे दिल को अपना घर
और सदा इस में रहा कर ॥

२९ उन्तीसवां गीत । 7s.

१ तेरो सना गाने को
हमद का गीत सुनाने को
ऐ मसीहा मेरे यार
कर तू मेरा दिल तैयार ॥

२ मैं गुनाह का था गुलाम
भूला भटका बेआराम
फिरता था गुमराह लाचार
बेतसल्ली बेक़रार ॥

३ खोजता था मैं मददगार
सब को पाता था नाचार
करता था अनेक तदबीर
पाता था सब बेतासीर ॥

४ सोचता था मैं दिन और रात
मेरी करे कौन नजात
करे कौन गुनाह को मआफ़
मेरा दिल कौन करे साफ़ ॥

५ मेरे ऊपर ईसा ने
नज़र की तब रहम से
हुआ मेरा मददगार
और उतरा मेरा भार ॥

६ ईसा मेरे दिल के यार
शुक्र अब हज़ार हज़ार
अब से ले हमेश: को
तेरे बड़े नाम पर हो ॥
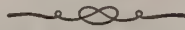
३० तीसवां गीत । 8, 7, 4s.

१ आदमी सारे गुनहगार थे
बेभरोसा और लाचार
ईसा उन की हालत देखके
हुआ उन का मददगार
ईसा आया
आदमी के बचाने को ॥

२ ईसा है नजात दिहिन्द;
  मेरे दिल का वह महबूब
उस से होऊं क्यों शर्मिन्द;
  गर्चि हुआ है मसलूब
    ईसा मुआ
  आदमी के बचाने को॥

३ सब गुनाह और ग़फ़लत मेरी
  ऐ खुदावन्द तू मिटा
देता हूं दुहाई तेरी
  फ़ज़ल कर मुझे बचा
    तू ही मुआ
  आदमी के बचाने को॥

४ ईसा पर ईमान गर लावें
  सारे आदमी बीच जहान
उस से सब नजात को पावें
  जावें आख़िर बीच आसमान
    ईसा जीता
  आदमी के बचाने को॥

३१ एकतीसवां गीत। 7s.

१ ईसा तू है मेरी आस
  आता हूं मैं तेरे पास ·

आब ओ खून जो बहे थे
तेरे छिदे पहलू से
वह गुनाह की दवा हो
दोज़ख़ से बचाने को ॥

२ मेरी मिहनत है बेकाम
रोने से दिल बेआराम
मिलती है सिर्फ तकलीफ़ात
इन से नहीं है नजात
मिहनत मेरी है बेकार
जो न हो तू मददगार ॥

३ ख़ाली हाथ मैं आता हूं
कुछ भी नहीं लाता हूं
नङ्गा हूं फ़क़ीर बदहाल
मुझ लाचार को कर निहाल
दे तू मुझे साफ़ पोशाक
कर तू मेरे दिल को पाक ॥

४ अन्धा हूं तू फ़ज़ल से
बन्दे को बीनाई दे
नजिस हूं नजासत को
धो ऐ ईसा उसे धो
नातवान को रहम से
तवानाई बख़श तू दे ॥

५ जब तक मेरा रहे दम
जिस वक़्त आवे मौत का ग़म
जब क़ियामत बरपा हो
और तू आवे हशर को
ईसा मुझे तब बचा
अपनी आड़ में तब छिपा ॥

३२ बत्तीसवां गीत । 8, 7, 4s.

१ पंथ बता महान परमेश्वर
बाट के भूले पंथी को
मैं बलहीन हूं तू बलवान है
मार्ग में मेरा साथी हो
स्वर्गीय भोजन
दे मुझ मुक्त के भूखे को ॥

२ खोल तू दे वह कुंड बिल्लौरी
निकसी जिस से जीवनधार
आग और मेघ का खंभ साथ देके
मुझे यात्रा भर संभार
प्रबल ईसा
हो तू मेरी ढाल तलवार ॥

३ मृत्यु नदी तीर जो आऊं
भय और खटका सब मिटा
काल पाताल के हे जीतवैया
मेरा बेड़ा पार लगा
तेरी स्तुति
तब मैं सदा करूंगा ॥

३३ तैंतीसवां गीत । C. M.

१ हे प्रभु मुझे तू सिखला
ठीक प्रार्थना करने को
दयाल तू है और सामर्थी
सहायक मेरा हो ॥

२ तू मेरे पाप सब क्षिमा कर
दे मुझे धर्म्म का ज्ञान
और मेरे मन को शक्ति दे
कि उस पर करे ध्यान ॥

३ जब मुझे होवे सोग और रोग
तब मेरा कर उपकार
और अन्त में अपनी कृपा से
तू मुझे पार उतार ॥

३४ चैांतीसवां गीत।

१ आह गलगता पर आओ
और क्रूस पर आंख उठाओ
मसीह अत सोगी है
आह किस की आंख न भरे
और कैान बिलाप न करे
कि प्रभु दुःख का भोगी है॥

२ कह किस ने तुझे मारा
ऐ ईसा कष्ट का भारा
क्यों तुझ पर पड़ा है
हम ठहरे हैं कुकर्म्मी
हे प्रभु तू है धर्म्मी
तैा भी कष्ट तुझ को बड़ा है॥

३ जो अपराध हैं मेरे
जो रेत से बहुतेरे
बालों से अधिक हैं
उन्हों ने तुझे मारा
और दिया कष्ट अपारा
हां वेही तेरे बधिक हैं॥

४ जो कांटे सिर में गड़े
जो धप्पे मुंह पर पड़े
जो कष्ट उठाना था

जो तुझे घायल किया
और दुःख जो तुझे दिया
सो मुझ पापिष्ठ को पाना था ॥

५ हे प्रभु तेरा रोना
और तेरा दुखित होना
क्लेश तेरे घाओं का
और क्रूस पर तेरा मरना
और क़बर में उतरना
मैं मन में समरण करूंगा ॥

६ हे प्रभु अपना मरन
और मेरे प्राण का तरन
मन मेरे में गड़ा
और अपने दुःख के द्वारा
तू मेरा कर निस्तारा
और अंत में अपने पास उठा ॥

३५ पैंतीसवां गीत । 8, 7, 4s.

१ ईसा बाप का पसन्दीद:
देखो बाग़ में पड़ा है
मौत तक उस का दिल रंजीद:
ग़ज़ब उस पर बड़ा है
मेरी ख़ातिर
ऐ मसीह यह हुआ था ॥

२ दुशमनों ने तुझे लिया
ठट्टों में उड़ाया था
कोड़े मार बेइज़्ज़त किया
तू ने चुपके सहा था
मुझ बदकार ने
ऐ मसीह यह किया था ॥

३ फिर सलीब पर ईज़ा पाके
सिर और हाथ और पाओं पुरदर्द
तू मुसीबत सख़्त उठाके
हुआ सचमुच दुःख का मर्द
मेरे हाथ ने
तुझे यही ईज़ा दी ॥

४ तीसरे दिन तू फिर जी उठा
बैठा बाप के दहिने हाथ
ब वसीले रूहुलक़ुदस के
रहता है अपनों के साथ
मेरे लिये
तू आसमान पर ज़िन्दः है ॥

५ ऐ मसीहा मुंजी मेरे
मेरा तू कफ़्फ़ारः है
है नजात ब फ़ज़्ल तेरे
मेरा तू प्यारा है
ऐ ख़ुदावन्द
मैं हूं तेरा अबद तक ॥

३६ छत्तीसवां गीत । 7s.

१ फिर जी उठा है मसीह
दिन है खुशी का सरीह
जो सलीब पर मुआ था
ज़िन्द: है और रहेगा
हल्लिलूयाह ॥

२ क़बर का वह तोड़के बन्द
मौत पर हुआ फ़तहमन्द
अब खुदा के दहिने हाथ
बैठा है जलाल के साथ
हल्लिलूयाह ॥

३ जो कि हुआ था मसलूब
सो मुनज्जी है महबूब
चलें हम उस की दरगाह
मानें उस को शाहनशाह
हल्लिलूयाह ॥

३७ सैंतीसवां गीत । L. M.

१ सब करो ईसा की तअरीफ़
जिस ने उठाया दु:ख तकलीफ़

सलीब पर खींचा हुआ था
और उस पर होके मुआ था ॥

२ पर फिर जी उठके तीसरे रोज़
वह मौत पर हुआ है फ़ीरोज़
और हुआ कैद का करके हल
वह मुरदों में से पहिला फल ॥

३ ज्यों पहिले फल की ज़िन्दगी
त्यों पूरी फ़सल आवेगी
मसीह हयात ओ क़ियामत है
मसीही भी सलामत है ॥

४ मौत कहां तेरा डंक बता
बरज़ख़ तू कहां जीतने का
मसीह ने तोड़ा मौत का बन्द
और मुझे करता फ़तहमन्द ॥

३८ अठतीसवां गीत । C. M.

१ ईसा नजातदिहिन्द: है
मैं उस को मानता हूं
जो मुआ था सो ज़िन्द: है
यह ख़ूब मैं जानता हूं ॥

२ वह मेरा है रफ़ीक़ रहीम
सरदार और उम्मैदगाह
वह दु:ख में मेरा है हकीम
और ख़तरों में पनाह ॥

३ वकील वह होके बाप के पास
क्या मुझे भूलेगा
शफ़ाअ़त उस की पाक ओ ख़ास
ख़ुदा क़बूलेगा ॥

४ रूहे कुद्स को वह बहाता है
कि मेरा हादी हो
बंदों के दिल बसाता है
पाक रहनुमाई को ॥

५ और जहां गया मेरा यार
वां मैं भी जाऊंगा
मकान जो हुआ है तैयार
वां जगह पाऊंगा ॥

३९ उन्तालीसवां गीत । 8s.

१ धर्म्मसूरज ईसा जोतिमय
आज जोके हुआ है उदय
अब मिटी पाप की काली रात
सदा का जीवन हुआ प्रात ॥

२ वह मृत के बस न पड़ा है
सब शतरुन पर वह बड़ा है
क़बर से निकला ईसा बीर
हुआ प्रकाश महारंधीर ॥

३ जय जय हे ईसा बीर बलवान
सब शतरुन पर तू है जैमान
अब बैरी ठहरा बल रहित
और ईसा ठहरा बल सहित ॥

४ उदास मैं रहूं किस प्रकार
जीत गया मेरा तारनहार
जब टल भी जावे सब संसार
तब वह है मेरा प्राणआधार ॥

५ आनन्द से गावें हम यह गान
कि प्रभु हुआ है जैमान
वह सचमुच हुआ मृत्युंजय
जय प्रभु जय जय ईसा जय ॥

४० चालीसवां गीत ।　　होली

मसीह अस टेर सुनाई
सब चित में लेहु समाई
द्वादश सिख प्रभु संग लिवाये
नगरन धूम मचाई

बात कहत अरधांगि उठायो
मिरतक बहुत जिलाई
कोढ़िन को प्रभु चंगा कीन्हा
बधिरन दीन्ह सुनाई
पांच सहस को पांचहि रोटी
टूकन ढेर उठाई
एक समय प्रभु नौका बैठयो
चलत बयार सवाई
चेले सब घबरावत बोले
प्रभुजी लेहु बचाई
ठाढ़े हो प्रभु हांक पुकारी
सब दुख दीन्ह भगाई
ऐसे काम प्रभु अगिनित कीन्हा
जग में नाम चलाई ॥

४१ एकतालीसवां गीत । भजन

पातक दंड छुड़ावन यीशू
क्रूश उठायो अति दुःखदाई
परबत नाईं अघ मम भारी
अपनो तन पर लीन्ह उठाई
भोझ लिये प्रभु अंग पसीना
रुधिर समाना टपकत जाई

हाय हाय अस पाप हमारा
जीवन पति को जगत बुलाई
मेरे पातक कारन सांपे
जो दुःख लीन्ह कहा नहि जाई
निशि भर बैरिन अति दुःख दीन्हा
प्रात बिचारासन पहुंचाई
बहु बिध झूठे दोष लगाये
तौ प्रभु अद्भुत धीर दिखाई
बांधे कर सिर कंटक गूंधे
कांधे पर फिर क्रूश धराई
तब प्रभु को डाकुन के साथे
बिकट काठ पर घात कराई
यीशु दयामय जग जन त्राता
क्रूश चढ़ाये संकट पाई
ठोंके कील हाथ पगु सुन्दर
रक्त बहा नर मुक्ति उपाई
कहि है दास धरो मम प्यारो
प्रभु पर आशा सब सुखदाई
बाढ़े धरम करें शुभ कामा
शोक दोख मध साहस पाई ॥

४२ बयालीसवां गीत । भजन

जिन परतीत यिशू पर नाहीं
कस पावैं भवपारा हो
ज्ञानी पंडित जित जग भयेउ
डूब गये यहि धारा हो
ईश्वर बचन अनादि अनन्ता
सोई देत सहारा हो
सरग छोड़ जग में प्रभु आयो
मेघ जहां अंधियारा हो
जननी गर्भ मनुज तनधारा
सकल सृष्टि करतारा हो
नर सब भूले भेड़ समाना
जिन का नहीं रखवारा हो
तिन को यिशू महा सुख दीन्हा
दुख सहि कीन्ह उधारा हो
दास करे कहं लग परसंसा
प्रेम अमित बिस्तारा हो
आवो सब मिलि प्यारो भाई
संत गहो निस्तारा हो ॥

४३ तेंतालीसवां गीत । ग़ज़ल

यीशू की मुसीबत जिस दम तुम्हें सुनाऊं
आंखों सेती मैं आंसू क्योंकर नहीं बहाऊं
दुशमन जब उस को पकड़े बेआबरू कैसे किये
औ मानिन्द चोर की बांधके उसे शामिल अपने लिये
हाय हाय वे उसे घूसे औ तमांचे मारे खींचके
रखा था उस के सिर पर कांटों के ताज को सज के
नरकट के नल को लेके वे सिर पर उस के मारे
हाय हालत उस की देखो जो खुदा के थे दुलारे
मुंह पर भी उस के थूके और ठट्ठे में उड़ाए
बुराइयां उस की करके सलीब को तब धराए
और मारने को ले जाके कपड़े भी सब उतारे
हाय हाय अफ़सोस की जा है लोगों ने ठट्ठे मारे
लोहे की मेखें ठोकके हाथ पाओं को उस के फोड़े
सलीब को झटका देके बंद बंद उन्हों ने तोड़े
छ: घंटे पूरे यीशू रहे इस सख़्त अज़ाब में
तब मरके कामिल किया सब कुछ नजात के बाब में
हाय हाय यह क्या अजीब है गुनाह तो था हमारा
पर मौत रसीद: हुआ खुदा का बेटा प्यारा
ईमान अब उस पर लावें सब लोग जो सुननेवाले
महबूब औ शाफ़ी जान के भरोसा उस पर डालें ॥

४४ चवालीसवां गीत । पूर्व्वी

एक नाम योशु सांच
सर्ब्ब झूठ औरु रे
जेहि नाम छाड़ि मूढ़
पड़त भरम भारु रे
अमिय मूरि सुखद कन्द
लखत नाहि बौरु रे
आन नाम छलहि ठाम
हाथ लाय छौरु रे
उदर नाहि भरत खाय
घाट स्वान कौरु रे
जैसही तृषा कुरंग
गहन चहत दौरु रे
आय निकट दूरि जात
जात प्रान ठौरु रे
योशु नाम तरन धाम
नाहि जगत औरु रे
जान जेई सेई लहत
सीस मुक्ति मौरु रे ॥

४५ पैंतालीसवां गीत। चंचरी

यीशु नाम मानु मुढ़
समपति धन सांचो
जेहि नाम भज सुलोक
हरहि मूल सकल शोक
गाहहि दिव्य सुखद ओक
टारि बिभौ कांचो
अर्थ नाम जगत तार
प्रेम शक्ति करन पार
दुर्गम अति कलुष धार
भक्ति तरनि रांचो
और नाम जगत नाहि
धर्म ग्रन्थ थपत जाहि
हेरि हेरि थकत ताहि
जासु नरनि बांचो
यीशु नाम गुनन ग्राम
दुखित दीन सुलभ ठाम
तेज सह बरद धाम
जान केहि जांचा॥

४६ छियालीसवां गीत। पूर्व्वी

भजि ले मन दीन बन्धु
  दीन के सुतात रे
दीन शरन दीन भरन
  दीन जनन भ्रात रे
दीन पोख दीन तोख
  तासुं सतत पात रे
दीन निकट जेहि जात
  फीरि नाहि आत रे
दीन असन दीन बसन
  सर्व्व के सुदात रे
दीन नेह दीन गेह
  दीन नात जात रे
दीन ज्ञान दीन मान
  दीन शान पांत रे
सुफल सकल दीन सतत
  तासु पाय खात रे
दीन नाथ दृष्टि और
  कोउ नाहि आत रे
दीन जान जोड़ि पानि
  यीशु गुनन गात रे॥

४७ सैंतालीसवां गीत। भो

योशु नाम शुभ गान हमारो
जेहि नाम रटि दिवधाम गए
कत कोटिन्ह अघकारो
दिवगण जहि जपें निशि बासर
गगनहि करें बिहारो
सो नाम न जों यह जीह रटे
देउं समूल उपारो
होरा मानिक मोति जमाहिर
तस तुल माटि बिचारो
मंजु मनोहर आखर दाऊ
जावें तेहि बलिहारो
दुसह दुःख के सुखद रसायन
जीव अनन्त अधारो
मरन काल निर्भय वर दायो
कर गहि लेत उबारो
नामहि अस के नित गुन गाऊं
जों अवलंब तिहारो
गान करन को बर प्रभु दोजै
मांगत जान भिखारो ॥

४८ अठतालीसवां गीत । भैरो

जय जनरंजन जय दुखभंजन
जय जय जन सुखदाई
अशरन के शरनागति दायक
प्रभु यीशू जगराई
पाप निवारन दुष्ट बिदारन
सन्तन के सहजाई
अदभुत महिमा जगत दिखाए
भूमि निवासन आई
अलख अगोचर अन्तर जामी
नर तन देह धराई
अत गुन तेरो कत मैं गुनिहौं
तारनितें अधिकाई
उदधि समाना प्रेम तिहारो
जामध जगत समाई
जान अधम जन को प्रभु दीजे
बिन्दु समाना ठांई ॥

प्रभु का दूसरी बार आना ।

४९ उनचासवां गीत ।

7, 6s.

१ जाग उठो ईमानदारो
　　और हाथ में लो मशअ़ाल
अंधेरा हुआ जाता
　　आज़माओ अपना हाल
तुम कान और दिल लगाके
　　पहरू की सुनो बात
दुलहा है आनेवाला
　　जल्द होगी आधी रात ॥

२ मशअ़लें तुम सुधारो
　　और डालो उन पर तेल
मसीहा चला आता
　　जल्द होगा उस से मेल
दुलहे के इस्तिक़बाल को
　　अब निकलो खुश निगाह
आवाज़ से दिल लगाके
　　तुम गाओ हमदुल्लाह ॥

३ अब उस की देर न होगी
पस रहो तुम होशयार
हर जगह नज़र आते
बरआमद के आसार
होशयार कुंवारियों में
कौन हुई हैं शरीक
क्योंकि यह सच तुम मानो
कि दुलहा है नज़दीक ॥

५० पचासवां गीत। 8, 7s.

१ देख वे स्वर्ग से उतर आते
लाखोंलाख की बानी है
जयजयकार का गीत वे गाते
गाते हैं मसीह की जय ॥

२ मेघों से देख प्रभु आके
स्थापित करता अपना राज
अपने दुःख का फल वह पाके
होगा जग का अधिराज ॥

३ उस के बैरी डर के मारे
कांपते थर्थराते हैं
उस के संत लोग उस के प्यारे
जयजयकार मनाते हैं ॥

४ प्रथम में जो था सन्तापी
पहिने था कांटों का ताज
होगा सो महाप्रतापी
देसोंदेस का अधिराज ॥

५ प्रभु को हम दंडवत करते
अपना सिर निवाते हैं
प्रभु का हम आसरा धरते
जयजय ईसा गाते हैं ॥

५१ एकावनवां गीत । S. M.

१ देख प्रभु आता है
सुन पहरू की पुकार
हे मेरे भाई जागता रह
और उठके हो तैयार ॥

२ देख प्रभु आता है
कौन सेवक सोवेगा
संसार के लोग तो सो रहें
तू सोके खोवेगा ॥

३ देख प्रभु आता है
अंधेरा बड़ा है
और आधीरात की निद्रा में
सब जगत पड़ा है ॥

४ देख प्रभु आता है
वह देर न करेगा
मशअल को भाई हाथ में थांम
और भेंट को निकल जा ॥

५ देख प्रभु आता है
उठके तैयार हो जा
आत्मा और दुलहिन कहतीं आ
हां प्रभु ईसा आ ॥
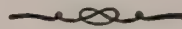
५२ बावनवां गीत । C. M.

१ आसमान के ऐ मुक़द्दसो
मसीह के हो मद्दाह
हमारे साथ खुदावन्द को
तुम जानो शाहनशाह ॥

२ और तुम जो उस की उम्मत हो
करो उस पर निगाह
अपने नजात दिहिन्द: को
तुम जानो शाहनशाह ॥

३ ऐ गुनहगारो याद रक्खो
मसीह का प्यार अथाह
मसलूब हक़ीर ग़मज़द: को
तुम जानो शाहनशाह ॥

४ सब निअ़मतों के शाकिर हो
ऐ सारी ख़लक़ुल्लाह
ज़मीन ज़मान के मालिक को
तुम जानो शाहनशाह ॥

५ आसमानीओं में शामिल हो
ख़ुदा ही की दर्गाह
औवल ओ आख़िर ईसा को
हम जानें शाहनशाह ॥
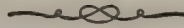
५३ तिरपनवां गीत । L. M.

१ सुब्हानुल्लाह मसीह सुलतान
राज करेगा तमाम जहान
सब लोग ज़मीन के ता कनार
मसीह के होंगे ताबेदार ॥

२ सब उम्मतें हर ज़ात और रंग
अ़रब ओ फ़ार्स हिन्द फ़रंग
और रूम और रूस और हबश चीन
मसीह की होगी कुल ज़मीन ॥

३ सब झूठ किताब क़ुरान पुरान
सब झूठे मज़हब सब बुतलान
इनसान शैतान की ज़िद ओ शर्र
तू ऐ ख़ुदावन्द दफ़अ़ कर ॥

४ वह वक़्त मसीहा जलदी ला
और सब मुख़ालिफ़त मिटा
जब तू ऐ सुल्ह के सुलतान
ज़मीन पर होगा हुक्मरान ॥
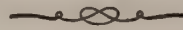
५४ चौवनवां गीत । 7s.

१ आवे प्रभु तेरा राज
सारे जगत में बिराज
देस के देस जो धर्म्मबिहीन
होवें तेरे सब अधीन
आवे प्रभु तेरा राज
सारे जगत में बिराज ॥

२ सब हैं भूले भर्म्मआधीन
सब हैं पापी मनमलीन
मुक्ति की आस से परे हैं
नरक मारग धरे हैं
आवे प्रभु तेरा राज
सारे जगत में बिराज ॥

३ तेरे परन हैं अबितीत
उस पर मेरी है प्रतीत
सब का राजा ईसा है
प्रभु और जगदीसा है

आवे प्रभु तेरा राज
सारे जगत में बिराज ॥

४ चाहूं दिस के द्वीप और देस
जानें तुझे जगनरेस
सब बिरोध का कर तू नाश
अपने तेज का कर प्रकाश ॥
आवे प्रभु तेरा राज
सारे जगत में बिराज ॥

५५ पचपनवां गीत।

१ खुश हो खुश हो मसीह का राज अब आता
खुश हो खुश हो ऐ सारी सरज़मीन
सैहून के लोग गीत गावेंगे
और खुशी सब मनावेंगे
खुश हो खुश हो मसीह का राज अब आता
खुश हो खुश हो ऐ सारी सरज़मीन
मसीह का झंडा खुशनुमा
सब दुनया में फहरावेगा
और हर एक क़ौम नज़दीक और दूर
मसीह में करेगी सुरूर
खुश हो खुश हो मसीह का राज अब आता
खुश हो खुश हो ऐ सारी सरज़मीन ॥

२ खुश हो खुश हो मसीह का राज अब आता
खुश हो खुश हो ख़लक़ुल्लाह गाओ गीत
सैहून से शरअ़ निकलेगा
रूए ज़मीन पर चलेगा
खुश हो खुश हो मसीह का राज अब आता
खुश हो खुश हो ख़लक़ुल्लाह गाओ गीत
हक़्क़ होगा तब हर जगह में
दरया सी होंगी बरकतें
क़रार करेगी हर ज़ुबान
मसीह है दुन्या का सुलतान
खुश हो खुश हो मसीह का राज अब आता
खुश हो खुश हो ख़लक़ुल्लाह गाओ गीत॥

३ खुश हो खुश हो मसीह का राज अब आता
खुश हो खुश हो राज करेगा मसीह
तब चीता भेड़ से खेलेगा
ज़ोर ज़ुल्म कुछ न चलेगा
खुश हो खुश हो मसीह का राज अब आता
खुश हो खुश हो राज करेगा मसीह
तलवारें तोड़के हंसिये
और फालें वे बनावेंगे
लड़ाईयां बन्द हो जायेंगी
सुल्ह से क़ौमें रहेंगी
खुश हो खुश हो मसीह का राज अब आता
खुश हो खुश हो राज करेगा मसीह॥

५६ छप्पनवां गीत ।   7s.

१ निगाहबान अब रात में क्या
ख़बर दे कुछ है निशान
राही देख और खुश हो जा
एक सितारे की उठान
निगाहबान क्या उस का नूर
खुशी का कुछ है पयाम
राही लाता है ज़रूर
इसराएल के खुश ऐयाम ॥

२ निगाहबान अब रात में क्या
देख सितारे की चढ़ान
राही दिन और रोशनी का
चैन और सुख का वह निशान
निगाहबान क्या उस की सैर
एक ही मुल्क को खुश आसार
राही कुल ज़मीन की ख़ैर
उस से होती है आशकार ॥

३ निगाहबान अब रात में क्या
देखो पौ अब फटती है
राही हां अंधेरा सा
खौफ़ और दहशत हटती है

निगहबान घर अपने जा
दिन का नूर अब पाया है
राही देख सलामत का
शाहनशाह अब आया है ॥
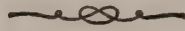
५७ सत्तावनवां गीत । भजन

न्याय दिना बरनन बहु भारी
वाको को जन गैहै
घोर टेर घन मेघन माहीं
तुरही शबद बजैहै
चारों दिगतें मिरतक सुनिके
जीवत सकल उठै हैं
जल औ थलसों हरिखित धाई
सन्तन सैन्य जमै है
खीष्ट धरम पहिने बिश्वासी
सुन्दर बिमल दिखै हैं
दुष्ट भयातुर मन अति शोकित
बाएं हाथ करै हैं
आश्रित को प्रभु दहिने राखो
जो तू करुणामय है ॥

सुसमाचार ।

५८ अठावनवां गीत । 8, 7, 4s.

१ आओ गुनहगारो आओ
थके मांदे ख़्वार ओ चूर
ईसा पास तुम को बख़्शाने
रह्म है और सब मक़्दूर
सब का मुंजी
वह है उलफ़त से मअ़मूर ॥

२ रासती के ऐ भूखे प्यासो
लो ख़ुदा को बख़्शिश को
हक़ ईमान और सच्ची तौबः
साथ लेआके हाज़िर हो
बिना नक़दी
ईसा से नजात को लो ॥

३ पहिले अपनी चाल सुधारना
देखो भाई क्या ज़रूर
सिर्फ़ एक बात ख़ुदावन्द चाहता
आप को जान लाचार मजबूर
ऐसे हाल में
तू मसीह को है मंज़ूर ॥

४ देख गतसमनी के बाग़ में
ईसा गिरा जानफ़िशान
सुन गलगता के पहाड़ पर
उस की बात को मरते आन
पूरा हुआ
है नजात का सब सामान ॥

५ मूमिनों का वह शफ़ी है
अब आसमान पर पुर जलाल
अपने सब गुनाह समेत अब
अपने तईं तू उस पर डाल
सिर्फ़ मसीह से
सुधर जाता तेरा हाल ॥
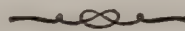
५९ उनसठवां गीत। 8, 7s.

१ दानिश सीखो ऐ नादानो
देरी क्यों तुम करते हो
आज का वक़्त ग़नीमत जानो
कल की देरी मत करो ॥

२ तौब: करो गुनहगारो
करो आज कि जीते हो

मौत नज़दीक है सच तुम जानो
कल की देरी मत करो ॥
३ आज तो है तुम्हारा स्वासा
आज मसीह की ओर फिरो
जब तक स्वासा तब तक आसा
कल की देरी मत करो ॥
४ बेबहा नजात की पूंजी
गुनहगारो मुफ़्त में लो
ईसा को तुम जानो मुंजी
कल की देरी मत करो ॥

६० साठवां गीत। 6, 6, 4s.

१ आओ सब पापी लोग
हुए जो नरकजोग
जी से उदास
आओ जो धर्म्मबिहीन
आओ जो मनमलीन
ईसा के हो अधीन
ईसा के दास ॥

२ जग में मसीह कृपाल
प्रभु ने हो दयाल
लिया अवतार

प्रभु का नेम और नीत
प्रभु का प्रेम और प्रीत
देखो सब धर्म्म की रीत
अपरमपार ॥

३ अपने पर लेने दुःख
औरों को देने सुख
आया वह आप
सहा है कष्ट महान
दिया है अपना प्राण
किया है जग का त्राण
किया मिलाप ॥

४ आओ मसीह के पास
करो उस पर बिस्वास
सब है तैयार
लेओ तुम मुक्ति ज्ञान
लेओ तुम मुक्ति दान
केवल मसीह से त्राण
पाता संसार ॥

६१ एकसठवां गीत । 11s.

१ हे पापियो सुनो सब ईसा की बात
क्या हिन्दू क्या मुसलमान हर कोई ज़ात

इस बात को बिचार करो भूलियो मत
कि अंतकाल में होगी तुम्हारी क्या गत॥

२ हम सकल अपराधी हैं मन के मलीन
अज्ञानता के बस में और दुष्ट के अधीन
दीनबन्धु दीननाथ दीन के कृपानिधान
मसीह दयासिन्धु से जगत का त्रान॥

३ जो पाप से पछतावे जो जान से उदास
और ईसा मसीह पर जो करे बिस्वास
सो उसी से पावेगा सच्चा निस्तार
कि तारेगा उसे मसीह तारनहार॥

४ हे भाइओ आओ मत करो बिलंभ
सब दुखी संतापी यह देखो अचंभ
कि प्रभु के मरण से पापों की छय
और पापों की छय से है प्रभु की जय॥

५ जो आवेगा पावेगा मुक्ति का धन
कंगाल वह न रहेगा धनी वह जन
कि ईसा के जितने बिस्वास करनेवाल
हैं मुक्ति के भागी जुग जुग सदाकाल॥
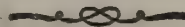
६२ बासठवां गीत । 8, 7, 4s.

१ आओ तुम जो दीन हीन पापी
दुखित क्लेशित बिन बिसराम
पाप के कारन जो बिलापी
जी से गहो ईसा नाम
प्रभु ईसा
सिद्ध कर चुका तेरा काम ॥

२ हम सब अधम दीन हीन पापी
सब हैं दोसी नरकजोग
ईसा तू ने किया आपी
जग के पाप के दंड का भोग
प्रभु ईसा
तुझ को ताकते पापी लोग ॥

३ दुःख उठाना तुझ को भाया
जगत पर दिखाने प्रेम
उन के पाप का दंड उठाया
किया उन के त्रान का नेम
प्रभु ईसा
तेरी कृपा से है क्षेम ॥

४ सारे जग का तू है राजा
राज को करने जलदी आ

देस बिदेस हों तेरी परजा
देवपूजा तू मिटा
प्रभु ईसा
अपना राज तू जलद् दिखला ॥

६३ तिरसठवां गीत। 8, 8, 8, 6s.

१ खुदाया मिहरबानी कर
राह अपनी मुझ पर ज़ाहिर कर
गुनाह से मुझे ताहिर कर
नापाकियों से धो
तक़सीर मैं अपनी जानता हूं
और दिल नापाक है मानता हूं
बखूबी यह पहचानता हूं
कर मश्राफ़ मुझ आजिज़ को ॥

२ सचाई दिल में ऐ खुदा
तू चाहता है हां सरता पा
है मेरा हाल नजासत का
मैं बिलकुल हूं नापाक
खुदाया मुझे तू धो डाल
और मुझे हरगिज़ न निकाल
मुझ गुनहगार को तू संभाल
न मुझे कर हलाक ॥

३ ईसा मसीह जो आया था
और दु:ख ओ दर्द उठाया था
और अपना ख़ून बहाया था
 है उस पर मेरी आस
जो दोनों है ख़ुदा इनसान
मैं उस पर लाता हूं ईमान
और उस की भी हर जा हर आन
 मैं करूंगा सिपास ॥

४ तू अपनी राह इनायत कर
और प्यार तू मेरे दिल में भर
और मुझे पाक कर सरासर
 ऐ मिहरबान ख़ुदा
तब जब तक पार न जाऊंगा
मैं हुक्म बजालाऊंगा
फिर उस पार होके गाऊंगा
 तअरीफ़ लाइनतिहा ॥

६४ चौंसठवां गीत । 7s.

१ मैं हूं बड़ा पापी जन
प्रभु ईसा दयावन्त
तेरे पास है धर्म्म का धन
तेरी कृपा है अनंत

२ तुझ बिन मेरा होगा क्या
मुझे करे कौन निस्तार
तू मुझ पापी को बचा
तू ही है बचानेहार ॥

३ औगुन से क्या निकले गुन
सूखे से कब निकले जल
पापी से क्या होवे पुन
बुरे पेड़ का बुरा फल ॥

४ प्रभु कृपासागर तू
मुझ पर हूजिये कृपावान
प्रभु जगउजागर तू
मुझे कर प्रकाशमान ॥

५ जब तक मेरा जीवन हो
रहूंगा मैं तेरा दास
बेर जब हो सिधारने को
जाऊंगा तब तेरे पास ॥

६५ पैंसठवां गीत। 8, 7s.

१ आया हूं मसीह पास तेरे
मुझे दूर न कीजियो
बाइस गुनाहों के मेरे
मुझे हांक न दीजियो ॥

२ मूसा तू नजात के लिये
मेरी ख़बर लीजियो
औरों के गुनाह बख़्श दिये
मेरे भी बख़्श दीजियो॥

३ रूहुलक़ुदस की पाक निअ़मत
बन्दे को तू दीजियो
आवेगा जब रोज़ क़ियामत
मुझे तब थांम लीजियो॥

४ मेरे दुशमन हैं घनेरे
मेरी मदद कीजियो
सौंपता आप को हाथ में तेरे
मुझे छोड़ न दीजियो॥

६६ छियासठवां गीत। 8, 7s.

१ प्रभु ईसा जगदीसा
पाप के भार से कर निस्तार
तू है तारक और उपकारक
मुझे तार हे तारनहार॥

२ मैं हे त्रानी हूं अज्ञानी
नेत्रहीन और मनमलीन
धरमरहित और पापसहित
आसराहीन और दुष्टआधीन॥

३ तू है मित्र है पवित्र
मैं अशुद्ध और नीतबिरुद्ध
तू दयालु और कृपालु
दे निरबुद्ध को आत्मिक बुद्ध

४ जगतत्राता मुक्तिदाता
कृपामय और मृत्युंजय
ईसा स्वामी अंतरजामी
तेरी जय है पाप को क्षय ॥
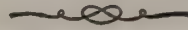
६७ सतसठवां गीत। 8, 7s.

१ या यहोवाह क़ादिर ईसा
ख़बर ले शिताबी से
तुझी तुझी को पुकारा
अज़ हद्द ग़म बेताबी से
रहम कर ख़ुदा करीमा
दे नजात ख़राबी से
या यहोवाह क़ादिर ईसा
ख़बर ले शिताबी से ॥

२ पहिले था अज़ हद्द मैं काफ़िर
पूजा देव भवानी को
गुरू पीर बहुत से पूजे
पूजा शंकर दानी को

सतसंग किया ज्ञान भी पाया
ज्ञान सुनाया ज्ञानी को
पाई सब कुछ भूल शैतानी
पूजा तब यज़दानी को ॥

३ शास्त्र वेद पुरान की बातें
पंडितों की बानी से
सुनी मैं ने बहुतेरी
मानी भी नादानी से
पर जब आंखें मेरी खुलीं
रब्ब की मिहरबानी से
राहए नजात को मैं ने पाया
तब कलाम रब्बानी से ॥

४ मेरे दिल तू छोड़ दे आसा
गुर्बा शुर्फ़: दानी का
उक़्बा वास्ते सब बेफ़ाएद:
इल्म और ज़ोर जवानी का
मेरे दिल हो खुश ओ खुर्रम
छोड़ ज़िन्दान हैरानी का
ले मसीह से जल्द तू तुहफ़:
ज़िन्दगी ग़ैरफ़ानी का ॥

६८ अठसठवां गीत। 7s.

१ ऐ खुदावन्द मदद दे
मेरा बोझ गुनाह का ले
मुझ लाचार की आरज़ू पर
अपना कान मसीहा धर॥

२ आगे झूठ को मानता था
बलकि यह भी जानता था
जो सवाब कमाते हैं
सो नजात को पाते हैं॥

३ अब मैं जानता मेरा काम
अबस है और नातमाम
उस की आस है भूल की बात
ख़ाली फ़ज़्ल से नजात॥

४ ईसा आस तू मेरी है
हां दुहाई तेरी है
बदी मेरी मआफ़ करवा
ताक़त नेकी की दिलवा॥

६९ उनहत्तरवां गीत। C. M.

१ नजात खुशख़बरी का पैग़ाम
है दिल को ख़ूब मंज़ूर
दिलगीर को देता है आराम
और ख़ौफ़ को करता दूर॥

२ जहन्नम के दरवाज़े पर
बेजान हम पड़े हैं
फिर पैदा होके ताक़तवर
हम ज़िन्द: खड़े हैं॥

३ ज़मीन के सारे ईमानदार
तुम सारी क़ौमों को
इनजील की बरकत बेशुमार
नजात की ख़बर दो॥

७० सत्तरवां गीत।

तुम बिन मेरो कौन सहायक
प्रभु यीशू स्वर्गबासी
अगिनित पापिन को तुम तारयो
तुम पै जो बिश्वासी

दीनहीन सरनागत जेई
    तेहि दियो सुखरासी
हम पापिन को उधारो प्रभुजी
    कृपा दृष्टि निहारी
औरन को प्रभु और भरोसा
    हम को शरन तुम्हारी ॥

७१ एकहत्तरवां गीत। भैरो

मन मन्दिर आए प्रभु यीशू
कीजे अपनो बासा जी
यही अपावन मन्दिर माझे
शत्रुन डारयो पासा जी
प्रभु तुम ताको काटि दुरावो
दिखाय दंडक त्रासा जी
चैादिश घेरे बिषय बिरोधी
मन बच काया ग्रासा जी
काह करों किछु सूझत नाहीं
तेरो त्रानक आसा जी
जोग न जैा पैहों प्रभु तेरो
करहु दया परगासा जी
बिपति सहयो तुम दुखितन कारन
मेरो यही दिलासा जी

और करो मत मोर परेखन
छनिक भये यहि खासा जी
केते पतितन तुम तारयो प्रभु
जानहु तेरो दासा जी॥

७२ बहत्तरवां गीत।

हे मेरे प्रभु
मो पापी उद्धारियो
छोड़ो न कभू
न मोहे बिडारियो
हे प्रभु मैं पापी
यह निश्चय आप जानियो
हाय कैसो सन्तापी
मो दुखी पहचानियो
हे कृपा निकेतु
मो पापीपै लखियो
और तारन के हेतु
मोहे चरनपै रखियो
मैं अति अशुद्ध
अशुद्धकूं शुद्ध करियो
मैं अति निर्बुद्धि
निर्बुद्धकूं बुद्धि भरियो

मैं अधम अयोग
तो आप यह न मानियो
पै आप पापी लोग
नित अपनी श्रोर तानियो
जब होयगो मरन
तब प्रभु शांत करियो
श्रोर जब लों है जीवन
मोहे प्रेम करके भरियो ॥

७३ तिहत्तरवां गीत।

जगतारक योशु समीप चलो
तिन सेवक पावन भाग भलो
धन आदर नाम बिलास गहे
मत आपहि नैनन मूंदि छलो
जग बीतत है जस मेघ धुआं
तिहि भोग किये कित काल यलो
जनि मुक्ति बिखै निहचिंत रहो
नहि तो पछतावत हाथ मलो
प्रभु योशु पहाड़ समान अछै
तिहि तारक मानि कभू न टलो
शुभ भूतलमें जस बीज बढ़े
तस योशुहि मानि सुकाज फलो

प्रभु आश्रित होय बिचार दिवो
सरगोघर जावन को उझलो ॥

७४ चौहत्तरवां गीत।

जो तुम जीवो तो कर लो बिचारा
यीशू है मेरो सिरजनहारा
जीवन मरन यही संसारा
यीशु नाम से होत सुधारा
मातु पिता दुःख देखि निहारें
कोइ नहीं दुःख बाटनहारा
बेटी बहिन अरु घर की नारी
रोअत बिलपत सब परिवारा
लोग बाग सब सोचन लागें
हंस कहां गया बोलनहारा
अबही चेतो हे अभिमानी
काल सिरहाने आय पुकारा
उठरे पापी तोहि बुलाई
अगिन जहां नहीं बुझनहारा
यीशु के लोग जहां जत होई
सुनत नहीं यह बोल करारा
धर्म्मरूप तब कहत सुनाई
चलिये प्रभु दर्शन को प्यारा ॥

७५ पचहत्तरवां गीत। रेख़ता

दुनिया में दिल नाहि लगाना
यह जिनगी के कौन ठिकाना
ख़ाबों में जस माल ख़ज़ाना
पाय करे मन मौज अपाना
चौंक पड़े सब धूरि मिलाना
तैसहि दुनिया जानु नदाना
परनारी धन देखि दिवाना
फ़ज़िहत खाये प्रान गमाना
जौंप मिले नहि काम भराना
बुदबुद कुश्रत बात उड़ाना
होश करो नर बयस सिराना
यीशु मसीह पर लाउ ईमाना
जान अधम यहि सांच सिखाना
जौं सुख चाहो अमर निधाना ॥
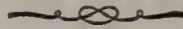
७६ छिहत्तरवां गीत। पस्तो

दुनिया है दग़ादार
ख़बरदार यारो
जो सब नज़र आती है
सम ख्याल शुमारो

रफ़तार की बेर हुई
  जिमि हाट उसारो
रंग भूमि नर आए
  कछु खेल पसारो
एक हि छन नाच लिये
  फिर जाहि किनारो
मुसाफ़िर के नाईं
  निज राह सिधारो
पल में धन लूट लैहै
  जग चोर चवारो
किसी को न दिल दीजे
  दिल जान विचारो
एक हि दिलदार है
  प्रभु यीशु तुम्हारो ॥

७७ सतहत्तरवां गीत । ठुमरी

जय परमेश्वर प्रेरित आवत
  सोहत प्रभु सुखदाई
जय जय दाउद बंश उजागर
  शांति जगत जिन लाई
जगत भुआला जय शुभशाला
  प्रगटे निज पुर आई

को तुमरे सम अधम उधोरन
  किन के अस प्रभुताई
जय जनरंजन जय दुखभंजन
  जय खलगंजन सांई
लोक सुहावन शोक नसावन
  युग युग तोर दुहाई
त्राहि त्राहि नर नारी टेरें
  जान अधम हरखाई ॥

७८ अठहत्तरवां गीत । भैरो

जय जय परमदयामय स्वामी
  सुमरन गान करोरे
बिजली पवन मेघ बश जाको
  और सिन्धु हिलकोरे
दिन दिन नर तसु प्रेम सराहो
  सांझ पहर अरु भोरे
भक्त समाज निरन्तर ताको
  भजो सहित अनुरागे
ईश्वर गुण अहलादित गावो
  प्रेम सुखद रस पागे
ईश्वर कृत तन जीव हमारा
  अदभुत करम अनूपा

अन्न नीर दाता प्रतिपालक
धन्य दयायुत भूपा
करहु सकल जग तिहि परसंसा
शुभ सुर शब्द उठाई
आश्रित गान विशेषित टेरो
मनही मन हरखाई ॥

पवित्र आत्मा ।

७९ उनासीवां गीत । S. M.

१ दुआ तू मेरी सुन
रूहुलकुदस ऐ पाक उसताद
और हर एक कैद की बेड़ी से
तू मुझे कर आज़ाद ॥

२ और अगर ऐसा हो
कि कोई बद दसतूर
मैं अपने दिल में पालता हूं
कर उस को मुझ से दूर ॥

३ और मेरे सारे अंग
हों तेरे तअबेदार
तू मेरी आंख ज़ुबान और कान
हर अंग का हो मुख़तार ॥

४ मैं ख़ूनख़रीद: हूं
खुदावन्द ईसा का
पस अपनी जान औ जिसम को
मैं उस का जानूंगा ॥

५ और तू ऐ रूहुलक़ुदस
राह रास्त पर चलने को
मेरा मुअ़ल्लिम रोशनगर
और मेरा हादी हो ॥

८० अस्सीवां गीत । L. M.

१ ऐ रूहुलक़ुद्स तू मिहर कर
और नाज़िल हो मुझ आजिज़ पर
अपने मुअस्सिर जोर से आ
तारीकी दिल की तू मिटा ॥

२ बिज़ातिहि मैं हूं ख़राब
नेक काम के लिये हूं बेताब
बलकि गुनाह के सबब से
हूं मानिन्द दिल के मुरदे के ॥

३ बख़्श मुझे रूह की ज़िन्दगी
कि करूं तेरी बंदगी

ऐ रूह तू उतर आ मुझ पर
और अपनी क़ुदरत ज़ाहिर कर ॥

४ तू जानता मेरे दिल का हाल
सब ग़फ़लत उस में से निकाल
और अपने बड़े फ़ज़ल से
तू सच्ची दानिश मुझे दे ॥

८१ एकासीवां गीत । L. M.

१ ऐ रूहुलक़ुद्स तू उतर आ
और दिल में रोशनी तू चमका
रूहानी ज़िन्दगानी दे
भर दिल हमारे उलफ़त से ॥

२ देख हम हैं कैसे ख़ताकार
गुनाह का करते हैं इक़रार
कि उस का बोझ सताता है
हमारे जी दबाता है ॥

३ हम गीत बेफ़ाइद: गाते हैं
जो नहीं दिल लगाते हैं
बिन तेरे फ़ज़ल हम लाचार
ऐ रूहुलक़ुद्स हो मददगार ॥

४ हम सभों को तू अब जता
रूहानी ग़फ़लत से जगा
तू बंदगी को ताक़त दे
कि होवे रूह और रास्ती से ॥

सच्चे खिष्टियान की आत्मिक गति।

८२ बयासीवां गीत। 11, 12s.

१ ईसाई तू सोच कर है तेरा क्या नाम
ईसाई कह हर रोज़ है तेरा क्या काम
न नाम से पर काम से है काम तुझे भाई
जो नाम का और काम का सो सच्चा ईसाई ॥

२ दिल अपने में कह तू और कभी मत भूल
कि रब्ब की तअरीफ़ में आज रहूं मशग़ूल
गुनाह से मैं तौब: कर उस से बाज़ आऊं
मसीह पर ईमान ला जान अपनी बचाऊं ॥

३ मैं रूह ही से मारूं आज जिस्म् के काम
मैं मांगूं दीन्दारी और रूह के इनआम
याद करूं मैं रब्ब की जो हुई करामत
कि अल्लाह करीम है और मैं पुरमलामत ॥

४ मैं वक़्त को ग़नीमत जान हो रहूं चुस्त
और आक़िबत की फ़िक्र से न रहूं सुस्त
जहन्नम से भागूं जो जाए अज़ाब है
बिहिश्त् को मैं चलूं जो जाए सवाब है ॥

५ मैं अच्छे काम करने को रहूं तैयार
मसीही मुहब्बत में होऊं कामगार
शैतान की आज़माइश दुनया की ख़राबी
और अपनी बद ख़सलत पर पाऊं फ़त्हयाबी ॥

६ फ़िर आज मेरा मरना जो होवे ज़ुरूर
इनसाफ़ मेरा होगा ख़ुदा के हुज़ूर
पस भाई ईसाई आज अपना काम करना
जो करना है आज कर कि जल्द् होगा मरना ॥

८३ तिरासीवां गीत ।

१ तुझ पास ख़ुदावन्दा
तुझ पास ख़ुदा
हरचन्द मुझ को सलीब
दे पहुंचा
तौ भी यह गाऊंगा
तुझ पास ख़ुदावन्दा
तुझ पास ख़ुदा ॥

२ दुनया के जंगल में
अंधेरा है
पर तू रहीम ख़ुदा
नूर मेरा है
खुश हो मैं चलूंगा
तुझ पास ख़ुदावन्दा
तुझ पास ख़ुदा ॥

३ तू मुझे साफ़ दिखला
आसमानी राह
तब होगी मेरी जान
तेरी मद्दाह
मैं जलदी जाऊंगा
तुझ पास ख़ुदावन्दा
तुझ पास ख़ुदा ॥

४ ख़ुदाया अपने पास
मुझे बुला
दुनया का बियाबान
तब छोड़ूंगा
शादमान मैं आऊंगा
तुझ पास ख़ुदावन्दा
तुझ पास ख़ुदा ॥

८४ चौरासीवां गीत। 7, 6s.

१ मसीह ज़रूर है मुझे
मैं बड़ा गुनहगार
दिल मेरा है अंधेरा
आलूद: और बदकार
फ़क़त मसीह के ख़ून से
दिल की सफ़ाई है
इस सबब से मसीह की
हर वक़्त दुहाई है॥

२ मसीह ज़रूर है मुझे
मैं बहुत हूं कंगाल
मुसाफ़िर और परदेसी
ग़रीब भी और तंगहाल
मसीहा तेरा करम
नित रहे मेरे साथ
दे ताक़त मेरे पांव को
और थामे मेरे हाथ॥

३ मसीह ज़रूर है मुझे
वह मेरे दिल का यार
हमदर्द है मेरे दिल का
उतारा मेरा बार
संभालता है वह मुझे
जब दु:ख का ज़िक्र है

मेरे मसीह के दिल को
नित मेरी फिक्र है ॥

८५ पचासीवां गीत। C. M.

१ ईसा नाम तेरा दिलपसंद
और कान को है शीरीन
हमद् उस को कर आसमान बुलंद
और सारी सरज़मीन ॥

२ तू मेरी जान का है अज़ीज़
और आस और यार मक़बूल
सब तेरी निसबत है नाचीज़
और सोना चांदी धूल ॥

३ जिस बात का मैं हूं आरज़ूमंद
सो तुझ में है मौजूद
रोशनी बिन तेरे नापसंद
और दोस्ती नामक़सूद ॥

४ जो फ़ज़ल् तेरा बेबहा
सो दिल में ठहरा है
बलसान वह मेरे ज़ख़मों का
और दर्द की दवा है ॥

५ गा रहूंगा मैं ईसा नाम
और आवे मेरी मौत

तब मुझे देगा तू क़ियाम
कि तू है मौत की फ़ौत

८६ छियासीवां गीत । 8, 7s.

१ लाखों में एक मेरा प्रिया
एक ही मेरा प्रिया है
उस ने मेरे मन को लिया
प्रेम के बल से लिया है ॥

२ पाप के बन में था मैं धंसा
धरम बिहीन और मनमलीन
दुष्ट के जाल में था मैं फंसा
आसराहीन और दुष्टआधीन ॥

३ मेरा प्रीतम ईसा आया
खोजने और बचाने को
मुझे पाया और बचाया
उस की स्तुति सदा हो ॥

४ प्रिये प्रभु मन जो लिया
बस तो सब कुछ तेरा है
तन और धन भी तुझे दिया
फिर तू प्रीतम मेरा है ॥

८७ सत्तासीवां गीत । C. M.

१ मसीहा गर तू मेरा हो
तो दीन ओ दुनया की
हर अच्छी निअ़मत बन्दे को
बेशुबह: मिलेगी ॥

२ मसीहा गर तू मेरा हो
जो मुझे है ज़रूर
या दु:ख या सुख या जो कुछ हो
सब मुझे है मनज़ूर ॥

३ मसीहा गर तू मेरा हो
सतावे भी शैतान
तो उस से डरूं काहे को
मैं रहता बआमान ॥

४ मसीहा गर तू मेरा हो
खुशदिल मैं रहूंगा
अ़ज़ीज़ भी मुझे छोड़ें तो
मैं चुपका सहूंगा ॥

५ मसीहा गर तू मेरा हो
क्या डरूं मौत से भी
तब खौफ़ न होगा बंदे को
कि मौत है ज़िन्दगी ॥

८८ अठासीवां गीत। 11s.

१ मैं गाता हूं दिल से मसीह की तअरीफ़
ज़ात उस की बुज़ुर्ग है नाम उस का शरीफ़
मैं उस की मुहब्बत से हुआ मग़लूब
पस मेरा महबूब है मसीह ए मसलूब ॥

२ मसीहा मसलूब ऐ मुसीबत के मर्द
दर्द तेरे के सोचने से मुझे है दर्द
पर तेरी तसलीब पर नजात है मनसूब
तू मेरा महबूब है मसीहा मसलूब ॥

३ जब खून तेरा बहा पांच ज़ख़मों में से
जब मरके जो उठा फिर मुरदों में से
तब मेरा मुनज्जी तू हुआ क्या खूब
तू मेरा महबूब है मसीहा मसलूब ॥

८९ नवासीवां गीत । 8, 7s.

१ एक ही प्यारा है हमारा
दोस्त हक़ीक़ी यार अज़ीज़
उस की निसबत सारी उलफ़त
इस जहान की है नाचीज़ ॥

२ सच्ची इज़्ज़त लाएक़ हुर्मत
उस की ज़ात में शामिल है
इल्म ओ फ़ह्म हिल्म ओ रह्म
मेरे यार का कामिल है ॥

३ मेरा आसरा और भरोसा
ईसा की क़ुर्बानी है
दूसरा चारा है नाकारा
सिर्फ़ मसीह हक़्क़ानी है ॥

४ जो लियाक़त और सदाक़त
उस की मौत से सादिर है
सो लासानी और रब्बानी
वह नजात पर क़ादिर है ॥

५ उस की उलफ़त और मुहब्बत
मेरे दिल पर ग़ालिब है
अपने यार की मिहर ओ प्यार को
मेरी जान नित तालिब है ॥

९० नव्वेवां गीत । 7s.

१ मेरे दिल कौन तेरा यार
किस पर ठहरा तेरा प्यार
कहा किस का मानता है
मालिक किस को जानता है

मेरे दिल कौन तेरा यार
किस पर ठहरा तेरा प्यार ॥

२ दुनया देख है बेक़रार
दोस्त और दौलत नापाएदार
मत लगा आस ऐसों पर
इन पर तू न तकिय: कर
मेरे दिल कौन तेरा यार
किस पर ठहरा तेरा प्यार ॥

३ जो कुछ दुनया में मौजूद
सब कुछ है गुनाह आलूद
उन से दिल को मत लगा
उन से अपना हाथ उठा
मेरे दिल कौन तेरा यार
किस पर ठहरा तेरा प्यार ॥

४ सिर्फ खुदा है बाक़ियाम
सिर्फ आसमान है जाए आराम
सिर्फ मसीह है सच्चा यार
और सब कुछ है ख़ार ही ख़ार
मेरे दिल कौने तेरा यार
ईसा से हो तेरा प्यार ॥

९१ एकानवेवां गीत । 7s.

१ ईसा मेरे जानी दोस्त
आंधी चलती है बज़ोर
तेरे पास मैं भागता हूं
मौजें उठती हैं बशोर
जब तक चले यह तूफ़ान
मेरी आड़ हो ख़ाविन्दा
आख़िर तू सलामती से
मेरा बेड़ा पार लगा ॥

२ मेरी है तू जाए पनाह
मेरी जान तू रख बेडर
तू न तनहा मुझे छोड़
मेरी ख़ातिर जमत्र कर
मेरा तू भरोसा है
मेरा हामी से खुदा
तले अपने परों के
अपने बंदे को बचा ॥

३ जो कुछ मुझे हो दरकार
तुझ में है मौजूद तमाम
तू मुझ थके मांदे को
बारबरदार को दे आराम

तेरा नाम है रास्त और पाक
मैं नापाक हूं और मजबूर
मैं गुनाह से लदा हूं
पर तू फ़ज़ल् से मअ़मूर ॥

४ अपने बेहद्द रह्म से
मेरे सब गुनाह कर मआ़फ़
अपनी रूह के असर से
कर तू मेरे दिल को साफ़
तू हयात का चशम: है
ज़िन्दगी का है दरया
मेरे अन्दर जारी हो
बहता रह बेइन्तिहा ॥

९२ बानवेवां गीत । C. M.

१ एक चशम: शाफ़ी जारी है
मसीह के लहू का
जो उस में ग़ुसल पाता है
ज़रूर साफ़ होवेगा ॥
२ वह चोर जो हुआ था मसलूब
सो उस में हुआ पाक
मैं भी उस में नहाने से
पाक हूंगा और बेबाक ॥

३ बर्रे अज़ीज़ तू अपना खून
हर वक्त मुअस्सिर कर
जब तक तेरे ख़रीदे सब
न आए बाप के घर॥

४ मेरे गुनाह तू धोवेगा
ऐ ईसा सरासर
और तेरे रह्म की तअरीफ़
मैं करूं उमर भर॥

५ फिर मरते वक्त जब यह ज़ुबान
ज़मीन पर होगी बन्द
तब तेरे नाम को करूंगा
आसमान पर मैं बुलन्द॥

९३ तिरानवेवां गीत। 7. 6s.

१ अपने गुनाह मैं डालता
खुदा के बर्रे पर
वह सब ही को उठाके
ले जाता सरासर
मैं दिल का नजस लाता
मसीह वह धोवेगा
वह अपने लहू पाक से
हर दाग़ को खोवेगा॥

२ और अपनी सारी ख़ाहिश
मैं लाता ईसा पास
वह देता मुझे शफ़ा
और अबदी मीरास
मैं अपना रंज ओ फ़िक्र
और दिल का सारा बार
ईसा मसीह पास लाता
वह मेरा बारबरदार ॥

३ ईसा संभाल दिल मेरा
वह थका हारा है
हाथ तेरा मेरे तले
तू मेरा चारा है
इम्मानुएल मसीहा
नाम तेरा है शीरीन
ज्यों इत्र की खुशबूई
खुश जानते मूमिनीन ॥

४ ईसा मसीह की मानिन्द
फ़रोतन और रहीम
मैं दिल से होने चाहता
सचमुच ग़रीब हलीम
मैं तेरे पास आसमान पर
ऐ ईसा मिहरबान
जी जान से रहने चाहता
बीच पाक फ़िरिश्तगान ॥

९४ चैारानवेवां गीत। 8, 7s.

१ तेरा चरन मेरी सरन
  ईसा प्रभु प्रान के नाथ
कृपा करके मेरी सुध ले
  तेरे बिन मैं हूं अनाथ
दया तेरी आसा मेरी
  रख तू मुझ पर अपना हाथ॥

२ अब तो मुझ पर दयादृष्टि कर
  अपने सुपथ में चला
मेरी प्रीति और प्रतीति
  तुझ पर है और रहेगा
दया तेरी आसा मेरी
  तेरा दास मैं हूं सदा॥

३ हे कृपालु दीनदयालु
  तुझी को मैं गहता हूं
हे गुनखानी सबबर्दानी
  तुझ में तोश मैं लहता हूं
दया तेरी आसा मेरी
  तुझ में तृप्त मैं रहता हूं॥

४ तेरा हृदय निरमल सदय
  सूर्य्य सा है हे प्रान के मीत

मैं पापमूला से अत भूला
निस दिन करता कर्म्म अनीत
दया तेरी आसा मेरी
अपने दास को कर पुनीत ॥

५ इस संसार के कुब्यवहार से
असंतुष्ट है मन
मेरी आंख तो ताकती स्वर्ग को
जहां सत सुख नित नूतन
दया तेरी आसा मेरी
प्रभु मुझे कर ग्रहण ॥

९५ पंचानवेवां गीत । 7, 6s.

१ जैसे पति के बियोग में
पत्नी रो कलपती है
वैसे प्रभुजी कलीसया
तेरे हेत तड़पती है
पिता पास तू स्वर्ग को गया
बैठा उस के दहने हाथ
पर कलीसया रही भूम पर
होने चाहती पत के साथ ॥

२　प्रभु तेरा जस हम गाते
　　दुखी हो हम गाते हैं
अपने पत के गुन सुनाते
　　आंसू से सुनाते हैं
सोगी और बियोगी होके
　　देख कलीसया रोती है
कि वह अपने पत के लिये
　　सदा दुखित होती है ॥

३　सच कलीसया है सुहागन
　　उस का पत तो जीता है
उस का भाग भी है प्रफुल्लित
　　कुछ कुभाग न बीता है
किन्तु उस ने अपने गहने
　　बिरह में उतारे हैं
दुःख और कुढ़हन में रहेगी
　　क्योंकि पत पधारे हैं ॥

४　हे मसीहा प्रिये प्रभु
　　तेरी मंडली हे प्राननाथ
जब तक तू न लौटके आवे
　　तेरी ओर पसारती हाथ
जगत होता है अंधेरा
　　हम पर करता है अंधेर
तिस से तेरी दुल्हिन कहती
　　आने में न कीजिये देर ॥

५ फिर जब लों तू लौट न आवे
अपनी पी को सक्ति दे
कि वह पतिब्रता रहे
प्रीत न रक्खे जगत से
जब लों वह बियोग में रहे
तब लों उस का सत बचा
हे कलीसया के प्रानपति
प्रभु ईसा जलदी आ ॥

९६ छियानवेवां गीत । L. M.

१ तू हुक्म मान खुदावन्द का
जब वह बुलावे तब तू जा
जो तुझ पर भेजे सो तू सह
उस के थमाए खड़ा रह ॥

२ तुझे सराहे सिर झुका
हिल्म से बैठावे तब ससता
जब तेरी करे वह तसबीह
तब कह यह खूब है ऐ मसीह ॥

३ जब जा बजा वह हिल्म के साथ
बढ़ाता है नजात का हाथ
बचाता गुनहगारों को
तो उस से खुश औ खुर्रम हो ॥

४ जब बोलता है यह काम तू कर
तब काम को हाज़िर हो निडर
जब दिल में रहे वह चुपचाप
तब कुछ मत करो आप से आप ॥

५ पस बात यह है ऐ मेरी जान
फ़क़त मसीह का कहना मान
हो उस का हुक्म मुझ पर फ़र्ज़
और उस की रज़ा मेरी ग़र्ज़ ॥

९७ सत्तानवेवां गीत।   L. M.

१ जब तक ऐ मेरे बाप ख़ुदा
मैं इस परदेस में रहूंगा
तू मुझे बोलना यह सिखा
बाप मेरे तेरी मरज़ी हो ॥

२ अज़ीज़ जो है हर तरह से
जब कहे तू वह मुझे दे
तब कहूं मैं ख़ुदावन्द ले
बाप मेरे तेरी मरज़ी हो ॥

३ जब छोड़ना हो ख़ास दिल का यार
मैं जानूं तब कि मौत के पार
फिर उसे देखूं आख़िरकार
बाप मेरे तेरी मरज़ी हो ॥

४ जो सख़्त् बीमारी आती हो
और मेरा जिस्म खाती हो
यह बात मुझे सुहाती हो
बाप मेरे तेरी मरज़ी हो॥

५ जो मेरे साथ रूह तेरी हो
और देवे ज़ोर रूह मेरी को
तो जो तकलीफ़ बहुतेरी हो
बाप मेरे तेरी मरज़ी हो॥

६ तू मेरी मरज़ी ज़ियाद:तर
अपनी मरज़ी के तावे कर
कि कहूं दिल से सरासर
बाप मेरे तेरी मरज़ी हो॥

७ फिर आख़िर को जब मेरी जान
आज़ाद हो छोड़े यह मकान
तब गाऊंगा भी बर आसमान
बाप मेरे तेरी मरज़ी हो॥

९८ अठानवेवां गीत। 8, 8, 8, 6.
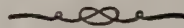
१ मैं जैसा हूं त्यों आता हूं
मैं साथ कुछ नहीं लाता हूं
मसीह पर आंख उठाता हूं
मसीह मैं आता हूं॥

२ दिल योंही साफ़ न होवेगा
एक दाग़ भी नहीं खोवेगा
सिर्फ तेरा लहू धोवेगा
मसीह मैं आता हूं ॥

३ मैं आता हूं ग़रीब लाचार
पास तेरे सब कुछ है तैयार
नजात का मैं हूं उम्मेदवार
मसीह मैं आता हूं ॥

४ तू मुझे बख़शेगा ज़ुरूर
अर्ज़ मेरी करेगा मंज़ूर
तू हक़ और प्यार से है मअ़मूर
मसीह मैं आता हूं ॥

५ तेरी मुहब्बत ने तमाम
रोक टोक सब तोड़ी लाकलाम
पास अपने मुझे रख दवाम
मसीह मैं आता हूं ॥
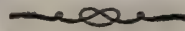
९९ निन्नानवेवां गीत। 7s.

१ जब आ जावे महाकष्ट
जब यह जगत होवे नष्ट

जब मैं स्वर्ग में उतरूं पार
पांके सदा का निस्तार
तब ही प्रभु समझ लूं
तेरा कितना धारता हूं ॥

२ तख़्त् के पास जब खड़ा हूं
महिमा जब पहिन लूं
देखूं तेरा तेज अपार
निर्मल मन से करूं प्यार
तब ही प्रभु समझ लूं
तेरा कितना धारता हूं ॥

३ जब मैं सुनूं स्वर्ग का गीत
उठता हुआ गर्ज की रीत
पानी का सन्नाटा सा
शब्द तो मीठा बीन का सा
तब ही प्रभु समझ लूं
तेरा कितना धारता हूं ॥

१00 सौवां गीत । 7, 6s.

१ सब बुरी चीज़ों से करीह
कौन चीज़ है कर बयान
सो है इनसान का दिल पलीद
गुनाह आलूद: जान

नापाकी का वह मसकन है
देवों का ख़ास मकान ॥

२ फिर सारी चीज़ों से कौन चीज़
है उमद: पाक औ साफ़
वह दिल है जिस के ईसा ने
गुनाह सब किये मश्राफ़
कि दुनिया की सब चीज़ों से
यह दिल है साफ़ शफ़्फ़ाफ़ ॥

३ ख़ुदा की जिस की नज़र से
न कुछ पोशीद: है
वह दिल जो धोया गया है
ख़ास पसंदीद: है
वह ईसा का न ज़रख़रीद:
पर ख़ून ख़रीद: है ॥

४ और सिर्फ़ मसीह के लहू पर
रब्ब करता है निगाह
लिबास पुरज़ीनत मूमिन का
वह है बे इश्तिबाह
और उस का लहू धोता है
हमारे सब गुनाह ॥

५ मसीहा तू ने बरपा की
यही नजात अजीब

और हमें फिर पहुंचाया है
खुदा के अनक़रीब
पस दिल का फ़ख्र सदा है
मसीहा की सलीब ॥
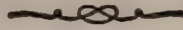
१०१ एक सौ पहिला गीत ।

१ आह दुर्गत दुराचार
जो मैं हूं किस के द्वारा
पाप मेरा मिटेगा
मुझ दुष्ट को कौन बचाने
परमेश्वर से मिलाने
और स्राप से छाड़ने सकेगा ॥

२ जो ईश्वर लेखा लेता
और पाप का पलटा देता
क्या होता मेरा भाग
तब मरना बिलबिलाना
और दांतों किचकिचाना
और मिलती मुझे नरक आग ॥

३ हे दुर्गतों की सरन
हे ईसा तेरा चरन
मैं धर पकड़ता हूं

सच मैं तो हूं अधर्मी
और मनमलीन कुकर्मी
पर तेरे पांव पर पड़ता हूं॥

४ धन प्रभु तू है मेरा
और मैं भी सदा तेरा
हे ईसा रहूंगा
और तेरी बड़ी दया
जो तेरा दास मैं भया
सो स्वर्ग में गाया करूंगा॥

१०२ एक सौ दूसरा गीत।

१ मैं मुसाफ़िर और मैं परदेसी
मैं सिर्फ रात भर टिकने का
मैं जलदी जाऊं क्यों करूं देरी
आसमान पर जगह तैयार है मेरी
मैं मुसाफ़िर और मैं परदेसी
मैं सिर्फ रात भर टिकने का॥

२ है उस देस में रोशनी हमेश;
उस को देखने चाहता हूं
कि इस परदेस में दिल है रंजीद;
दौड़ धूप उठाके मैं हूं ग़मदीद;
मैं मुसाफ़िर और मैं परदेसी
मैं सिर्फ रात भर टिकने का॥

३ नूर उस देस का जहां मैं जाता
मेरा मुंजी ईसा है
वहां न ग़म है न आहें भरना
और न गुनाह है न कभी मरना
मैं मुसाफ़िर और मैं परदेसी
मैं सिर्फ़ रात भर टिकने का ॥

४ मेरे वहां के रिश्त:दार भी
इधर आओ कहते हैं
पस रुख़सत होऊं यह जाए वीरान है
अंधेरी छाती दिल परेशान है
मैं मुसाफ़िर और मैं परदेसी
मैं सिर्फ़ रात भर टिकने का ॥

५ जब घर पहुंचा फिर न परदेसी
न मुसाफिर रहुंगा
आसमानी देस में मेरा आराम है
कमाल शादमानी वहां दवाम है
मैं मुसाफिर और मैं परदेसी
मैं सिर्फ़ रात भर टिकने का ॥

१०३ एक सौ तीसरा गीत। 8s.

१ मैं पहिना चाहता लिबास
मुहब्बत फ़रोतनी का
गुनाह से मैं होऊं ख़लास
ख़लासी तू बख़्श ऐ ईसा
और पाऊं मैं तेरी तशबीह
नारास्त होके होऊं रास्तबाज़
साथ तेरे है रास्ती मसीह
सिर्फ तुझ पर मैं करूं लिहाज़ ॥

२ तू मुझ पर ख़ास मुहर कर दे
बख़्श मुझे वह ख़ास नया नाम
जो मिलेगा फ़क़त तुझ से
और रहेगा मेरा मुदाम
मैं तुझ में नित रहूं फलदार
ख़ुदाया तू मुझे पाक कर
दे मुझे रूह पाक के आसार
नहीं तो मैं रहूं बेबर ॥

३ पाक रूह तू दिल मेरे में आ
कि फिर मैं न होऊं गुलाम
आज़ादगी मेरी फ़रमा
गुनाह से दे मुझे आराम

मैं दुनया को करूं न प्यार
पर उस को जो रास्त है और खूब
है दुनया की ख़्वाहिश बेकार
पर वफ़ादार ईसा महबूब ॥

४ खुदा ने जो दिया मुझ को
क़नाअत मैं करूं उस पर
खुदाया तू मददगार हो
और ख़बर ले मेरी ज़ीस्त भर
मैं पाऊं मसीह की पहचान
है उस की किफ़ायत क्या खूब
और सब कुछ मैं जानूं नुक़सान
मसीह की पहचान है मतलूब ॥

१०४ एक सौ चौथा गीत। C.M.

१ खुदाया मेरी ख़बर ले
   और मेरी मदद कर
हर वक्त हर हाल हर तरह से
   तू मेरी मदद कर ॥

२ जो माल से हूं मैं मालामाल
   डाल मेरे दिल में डर
जो होऊं मैं ग़रीब तंगहाल
   तू मेरी मदद कर ॥

३ हर ग़फ़लत से खुदावन्दा
मैं बचूं उमर भर
मुझे ख़ताओं से बचा
तू मेरी मदद कर॥

४ सब जालों पर इस दुनया के
शैतान के फंदों पर
मुझ आसी को तू फतह दे
तू मेरी मदद कर॥

५ और जिस वक्त मेरा मरना हो
मिटा सब खौफ़ ओ डर
तू दे पनाह मुझ आजिज़ को
और मेरी मदद कर॥

१०५ एक सौ पांचवां गीत। S. M.

१ मुख़ालिफ़ बेशुमार
तुझे सताते हैं
ऐ मेरे दिल हो ख़बरदार
वे तुझ पर आते हैं॥

२ तू जाग और मांग दुआ
दिलेर हो और निडर

तू हाथ को जंग से मत उठा
पर जी से लड़ा कर ॥

३ मत ढूंढ़ तू अब आराम
कि यह है जंग की जा
जो जंगी होगा फ़तहयाब
ताज उस को मिलेगा ॥

४ तब तक ऐ मेरे दिल
आराम को जान हराम
सरदार जब हुक्म देवेगा
तब होवेगा आराम ॥

१०६ एक सौ छठवां गीत ।

१ सिपाहिओ मसीह के तुम बकतर पहिन लो
जलील सैहून की राह पर तुमहारा जाना हो
लशकरकश है ईसा पैरौ उस के रहो
वह होगा फ़तहमंद
सना सना हल्लिलूयाह
सना सना हल्लिलूयाह
सना सना हल्लिलूयाह
हम होंगे फ़तहमंद ॥

२ सालार पुकारा करता हर आदमी हो तैयार
इंजील का झंडा लेके तुम रहो सब होश्यार
हिम्मत होती दिल में और हाथों में हथयार
आस रक्खो ईसा पर
सना सना हल्लिलूयाह
सना सना हल्लिलूयाह
सना सना हल्लिलूयाह
हम होंगे फ़तहमंद ॥

३ मसीह सिपहसालार पर तुम लाओ सब ईमान
निगाह तुम करो उस पर न कभी हो हैरान
न आदमी न शैतान से तुम होगे परेशान
तुम होगे फ़तहमंद
सना सना हल्लिलूयाह
सना सना हल्लिलूयाह
सना सना हल्लिलूयाह
हम होंगे फ़तहमंद ॥

४ जब तक न फ़तह पाओ उतारना न सिलाह
मसीह को तकते रहो वह है मज़बूत पनाह
ग़लबा वह भी देगा और ताज और आरामगाह
और खुशी अबदी
सना सना हल्लिलूयाह
सना सना हल्लिलूयाह
सना सना हल्लिलूयाह
हम होंगे फ़तहमंद ॥

१०७ एक सौ सातवां गीत। 7s.

१ भाई धर्म्म के जुद्ध में लड़
आत्मा की तलवार पकड़
बांध तू धर्म्म के सब हथयार
करने जुद्ध तू हो तैयार॥

२ आगे बढ़ मत हो भैमान
जो कि बैरी हो बलवान
न हो चलचित न निरास
हारे क्यों मसीह का दास॥

३ हो बलवन्त और दृढ़ और धीर
ईसा के समान हो थीर
जो वह सङ्गी होता है
तो हर बैरी खोता है॥

४ और दिन दो एक आप को थांभ
तब तू पावेगा बिसराम
तब सब दुःख की होगी छय
और तू गावेगा जय जय॥

१०८ एक सौ आठवां गीत।

मेरा नहीं है कोई मददगार या मसीह।
तू ही है हम सभों का मददगार या मसीह॥
अब ले ख़बर शिताब न कर बार या मसीह।
फ़रयाद मेरी तुझ से है हर बार या मसीह॥
तेरे सिवाए कोई नहीं यार या मसीह।
बंद: हूं तेरे दर का गुनहगार या मसीह॥
तू ही है आसियों का ख़रीदार या मसीह।
अज़ब्रस्कि हूं गुनाहों में गिरिफ़तार या मसीह॥
करता है आसियों को तू ही प्यार या मसीह।
हम आसियों की तुझ से है गुफ़तार या मसीह॥
तेरी तरफ़ सभों की है रफ़तार या मसीह।
करता हूं मैं गुनाहों का इक़रार या मसीह॥
हूं मैं गुनाह में अपने शर्मसार या मसीह।
हरगिज़ न डालियो मुझे दर नार या मसीह॥
शैतान मुझ से करता है तक़रार या मसीह।
रूहुलकुद्स की दे मुझे तरवार या मसीह॥
आसी को है तुझी सेती दरकार या मसीह।
तुझ बिन करेगा कौन मुझे पार या मसीह॥

१०९ एक सौ नवां गीत ।

खीष्ट बिमुख जो जन दुरचारी.
  जन्म अकारथ सोउ बितावे ।
यीशू प्रेम रतन जिन पाई.
  तिनको जग धन नहि ललचावे ॥
हरख उमंग रहे नित उन को.
  धर्म्म धीर बिश्वास जुगावें ॥
भक्ति रूप अस जासु न होई.
  झूठे सो प्रभु दास कहावे ॥
प्रीयो सब निज हिरद विचारो.
  कोउ न अपना मन बहकावे ॥
प्रेम अमित संपद जो राखे.
  सहि दु:ख संकट नहि अकुलावे ॥
उमड़त हिया बहत सुख धारा.
  औरन मनहु निहाल करावे ॥
प्रभु जी दास निवेदन सुनिये.
  अधम हिया फिर भटक न जावे ॥
पाप परीक्षा प्रभु सब टारो.
  निबल कुपुत्र सुपुत्र कहावे ॥

११० एक सौ दसवां गीत।

सुनो ऐ जान मन तुम को यहां से कूच करना है।
रहो तुम यादे हक़ में जब तलक यहां आब दाना है॥
अरे ग़ाफ़िल तू क्यों भूला है इस दुनया के लालच में।
रखो कुछ खौफ़ भी हक़ का अगर जन्नत को जाना है॥
करो टुक गौर तुम दिल में कहा क्या क्या तुम्हें उस ने।
किया था हुक्म जो हक़ ने उसे तुम ने न माना है॥
पड़े सोते हो ग़फ़लत में ज़रा टुक आंख को खोलो।
हुई है शाम उठ बैठो मुसाफ़िर घर को जाना है॥
न दौलत काम आवेगी न इस दुनया से कुछ हासिल।
अगर तुम सोचकर देखो यह सब कुछ छोड़ जाना है॥
जो मल्कउलमौत आवेगा तुम्हें इस जा से लेने को।
बहाना क्या करोगे तुम वह तुम से भी सयाना है॥
खुदा जब तुझ से पूछेगा तू क्या लया उस आलम से।
दिया था उम्र और दौलत तू क्या तुहफ़ा कमाया है॥
अगर ग़ाफ़िल रहे हक़ से तुम्हें दोज़ख में डालेगा।
रहे हो याद में हक़ की तो जन्नत घर तुम्हारा है॥
हयात अबदी अगर चाहो तो कह यीशू मसीह से तू।
वही शाफ़ी है उम्मत का कि जिस का नाम यीशू है॥
सलीब ऊपर उसे रखकर किया है क़त्ल ज़ालिम ने।
उसे मत भूल ऐ आसी वही तेरा ठिकाना है॥

१११ एक सौ ग्यारहवां गीत।

क्यों मन भूला है यह संसारा,
मन मत दे टुक कर ले गुज़ारा॥
इस जग में सुख नित नहि भाई,
यह तो है जैसे पानी की धारा॥
मात पिता और ख़ेश कुटुंब सब,
संग नहीं कोई जावनहारा॥
अंत समय सब देखन अइहैं,
छन भर में सब ह्वैहैं नियारा॥
जो कुछ अंग में होगा तुम्हारा,
वह भी सब मिल लैहै उतारा॥
नरक अगिन में जब तुम पड़िहो,
तब नहि कोई बचावनहारा॥
भाई मुकत की खोज करो तुम,
यीशु मसीह प्रभु तारनहारा॥
आसी तो प्रभु दास तुम्हारा,
तुम बिन नाहीं कोई हमारा॥

११२ एक सौ बारहवां गीत। गौरी

अरे मन भूल रहा जगमें, अरे मन भूल॥
यह जग तो मन छोड़ चलोगे, यीशू को मत भूल॥

यह तन का मन आस न कीजे, होगा धूल में धूल ॥
जबलग जीवन है मन जगमें, तभी तलक मन फूल ॥
सुन रे आसी मन चित देके, यीशू है जग मूल ॥

११३ एक सौ तेरहवां गीत। मल्लार

कौन करे मोहि पार तुम बिन।

दीनदयाल दयामय स्वामी, दुःख सुख पालनहार ॥
नर अपराधी कैसे तरिहे, दारुन भव नद धार ॥
माया जल निधि केवट कामा, इच्छा धरे पतियार ॥
तृष्णा तरंग पवन उठावत, कपट पाल हंकार ॥
मोह जलधर गरजन लागे, छदम लियो करुआर ॥
कामिनि दामिनि ऐसी चमकत, झहरत नैन निहार ॥
आसा लंगर तोहिपर बान्हो, तुमही मम कडिहार ॥
जान अधम बूड़त भव अर्नव, कोउ न आवत कार ॥

११४ एक सौ चौदहवां गीत।

प्रभु यीशू दरशन दीजे जी।
मोहे शरन अपनो लीजे जी ॥

तुम तो जग के तारनवारे, हम तो पापी दीन बेचारे ।
कृपा अपनीही कीजे जी ॥
तुम तो हो सरगन के राजा, आय जगत में दीनन काजा ।
मोहे अपनो करलीजे जी ॥
यह शैतान बड़ो दुःखदाई, जाने जगतही सकल भुलाई ।
याको बंधन कीजे जी ॥
हम तो इन बिषयन में भूले, घर की चिन्ता में रह फूले ।
धर्मातमा दीजे जी ॥

११५ एक सौ पंदरहवां गीत । ठुमरी

यीशू पैयां लागो,
नाम लखाई दीजौ हो ॥
जग अंधेरे पथ नहीं सूझे,
दिल को तिमिर नसाई दीजौ हो ॥
जनम जूनकौ सोवत मनुआ,
ज्ञानक नींद जगाई दीजौ हो ॥
हम पापिन की अरज मसीह जी,
पापक बन्द छुड़ाई दीजौ हो ॥

११६ एक सौ सोलहवां गीत। भैरो

भोर भयो तू अब लों सोअत . उठ योशू गुन गावो रे।
प्रात समय नव गीतहि गाए . चरनन सीस नवावो रे॥
भैरो रागहि भोर अलापो · प्रेम सुतान मिलावो रे।
बीन मजीरा भेरि पखावज · ऊचहि शब्द सुनावो रे॥
हिरदय जंत्र सुतंत्रहि साधो . सतकृत ताल लगावो रे।
तान पुरा सुरनाई नाडो . भक्ति सुधारस पावो रे॥
गायन को गुण जोइ सिखावत · देत मधुर सुर भावो रे।
जान अधम तुम सदगुन ताको . प्रातहि गाय रिझावो रे॥
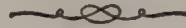
११७ एक सौ सत्तरहवां गीत। चच्चरी

तू भजि लेमन ज्ञान सहित . योशू जगराई॥
कोउ जपत बीर राम . कोउ भजत रसिकश्याम।
कोउ रटत सीय नाम . राधा कत· गाई॥
कच्छ मच्छ ब्राह बाम . नरहरि अरू परशुराम।
गंग तिरट बौध धाम . चन्द सूर नाई॥
कतिक कोटि सुरन देव . रचित सिलन माटि लेव।
भ्रमित नरन रहहि सेव . अचरज मुढ़ताई॥
करहु चेत तुरति स्यान . इन्हन सेव हरहु प्रान।
कहत बिनत अधम जान . सदसत बिलगाई॥
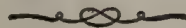
११८ एक सौ अठारहवां गीत । ख्याल

अरे हारे मन यीशू को जपना ॥

यीशु सिवा कोई पार न करिहै . यीशु पर चित धरना ॥
माया मोह बीच फल नाहीं . यीशू को रटना ॥
जबलग प्रान रहत है घटमें . तभी तलक अपना ॥
ज्ञान ध्यान से देखो मनमें . दुनया है सपना ॥
कहता है आसी सुन भाई साधू . आखिर है मरना ॥

११९ एक सौ उन्नीसवां गीत । ईमन

मन मरन मसय जब आवेगा ।

धन समपति अरु महल सराए . छूटि सबे तब जावेगा ॥
ज्ञान मान बिद्या गुन माया . केते चित उरझावेगा ॥
मृग तृष्णा जस तिरखत आगे . तैसे सब भरमावेगा ॥
मातु पिता सुत नारि सहोदर . झूठे माथ ठठावेगा ॥
पिंजर घेरे चौदिश बिलपे . सुगवा प्रिय उड़ जावेगा ॥
ऐसो काल शमशान समान . कर गहि कौन बचावेगा ॥
जान अधम जन जों बिश्वासी . यीशू पार लगावेगा ॥

१२० एक सौ बीसवां गीत । ईमन

मन मरन समय नियराता है ।

नैनन खोले चौदिश देखो . हर दम चिता चिताता है ॥
प्रातहि सूर उगे दिग पूरब . सांझ पड़न बुड़ जाता है ॥
चारि पहर के जिनगी तैसे . बुड़न न देरि लगाता है ॥
जो प्रिय बालक मातु खिलावत . गोदहि सो मरजाता है ॥
बापहि छोड़े मरहि कमासुत . कोइ कौन रख सकता है ॥
जग में जेते मरिहें सबही . क्या माया उरझाता है ॥
जौन घड़ी में आय बुलाहट . सबका सब छुट जाता है ॥
धन जन तनके कौन भरोसा . छन भर के यह नाता है ॥
अमर पदारथ जानहि पायो . यीशू जौ मन भाता है ॥

१२१ एक सौ एक्कीसवां गीत ।

यही जग बन अति भारी . संका संकट बासा ॥

मानुख मेम्ना सिंह शैताना . झाड़ी झूठ बिलासा ।
घाट अगोरि काल गौं गहिके . करही प्रान बिनासा ॥
भूली भटकी भेड़ उबारन . प्रभु तजि तेज निवासा ।
बन घन बिच बहु भरमत यीशू . लेहि मेघ निज पासा ॥
देह बिदारण दुःख अति दारुण . पीड़ शाप उपहासा ।
भार भयानक भया बिमल को . पापिन को प्रतिआसा ॥

नर निस्तार निरखि नैननतें . पावहिं दूत हुलासा ।
स्वामी धुनि सुनि आश्रित आवा . प्रभु करु मोहि निकासा ॥

१२२ एक सौ बाईसवां गीत । सारंग

क्या जान्यो नर ज्यों नहि जान्यो. मर्म कुचाली अपने मनकी॥
नाना बिध के बिद्या जानत . जोग जुगुत औ पर कारन की ।
नीकी चोखी तान अलापे . भेद जनित रागिनि रागन की॥
हय गज रथ फेरन जानत औ . बिद्या जानत गढ़ तोड़न की ।
तीर तुपक अति ठीक चलावत . निपुनाई नाना अस्त्रन की॥
धन अपनावन करि चतुराई . दंत क्रंत जानत जोड़न की ।
यह सब जानत औरो जानत . जानत औषध तन रोगन की॥
धूरि मिले सब जानब तेरो . कालहि आए जब लेखन की ।
भेद न पैहो जान अधम विनु: किरपा यीशू अघभंजन की॥

प्रार्थना और इबादत ।

१२३ एक सौ तेईसवां गीत । L. M.

१ ऐ भाईओ हम खुदावन्द के
गीत गावें खुशआवाज़ो से
हम जावें खुशी से मअ़मूर
और हिम्मत से उस के हुज़ूर ॥

२ यहोवाह है बरहक़ ख़ुदा
है मालिक दीन और दुनया का
हम भेड़ें हैं वह है चौपान
परवरदिगार और निगहबान॥

३ अब जमअ़ हो उस के हुज़ूर
हम उस की हमद से हों मसरूर
हों सना और सिताइश हो
हमेश: तक ख़ुदावन्द को॥

४ कि उस का अ़दल् है मुदाम
और उस का फ़ज़ल बिलदवाम
क़ौल उस का रहेगा बेशक
ज़मानों के ज़मानों तक॥

१२४ एक सौ चौबीसवां गीत। 8, 7, 4s.

१ हे हमारे स्वर्गी पिता
तेरा नाम पवित्र हो
तेरा राज भी जलदी आवे
स्वर्ग पर तेरी इच्छा को
जैसे मानते
वैसे हम से पूरी हो॥

२ जो है प्रतिदिन की रोटी
सो तू आज भी हमें दे
हम से अपराध जो हुए
क्षिमा कर तू कृपा से
जैसे हम भी
क्षिमा करते औरों के ॥

३ न परीक्षा में डाल हमें
किन्तु बुरे से बचा
क्योंकि राज और सब पराक्रम
तेरा है और महिमा
सदाकाल लों
आमीन ऐसा होवेगा ॥
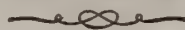
१२५ एक सौ पचीसवां गीत । L. M.

१ हे प्रभु मेरा मन थमा
और प्रार्थना करने को ठहरा
मन मेरा डोलता बेठिकान
कभी न होता एक समान ॥

२ ज्यों पानी में जब स्थिरता हो
मैं देखता स्वर्ग के सूरज को
त्यों मन जब स्थिर हो जाता है
तब तेरा मुंह दिखाता है ॥

३ हे प्रभु तु है मेरे पास
संग तेरा पावे तेरा दास
जो मेरे संग तू हो प्राननाथ
नेम प्रेम से बोलूं तेरे साथ ॥

४ जो प्रभु तू न हो साक्षात
तो प्रार्थना होगी छूछी बात
तू अपनी आत्मा मुझे दे
और मुंह भी मुझ से मोड़ न ले ॥

५ हे स्वामी मेरा मन थमा
और मुझ से बिन्ती अब करवा
प्रार्थना की आत्मा मुझे दे
कि प्रार्थना हो सचाई से ॥

१२६ एक सौ छब्बीसवां गीत। C. M.

१ जोतिमय पवित्र आत्मा
तेरे बिन सब अंधकार
मेरे मन में हो उजाला
तू है उजला करनेहार ॥

२ पाप के मैल से दे छुटकारा
तन और मन पवित्र कर
तेरा मंदिर मैं तो बनूं
अपने से तू मुझे भर ॥

३ ईश्वर से जब प्रार्थना करूं
प्रार्थना करने को सिखला
जब मैं धर्म्म पुस्तक पढ़ूं
मुझे उस का अर्थ बतला ॥

४ हे सहायक उपदेसक
मेरे यहां सदा हो
तू सर्वत्र और सर्वदा
मार्ग दिखा मुझ अंधे को ॥

१२७ एक सौ सत्ताईसवां गीत । L. M.

१ ऐ दुनया दिल से परे हो
और फ़ुरसत दे इ़बादत को
हो मेरा दिल इ़बादतगाह
मसीहा मुझ पर रख निगाह ॥

२ दिल को उभार ख़ुदावन्दा
पाक ख़ाहिशें इस में उगा
रूह तेरी हम में हाज़िर हो
और दे तौफ़ीक़ इ़बादत को ॥

३ नाम तेरा ईसा क्या अ़ज़ीज़
कलाम की लज़्ज़त क्या लज़ीज़
नजात की ख़ूबी जितनी हो
ना मअ़लूम है फ़िरिश्तों को ॥

४ शुक्र तअरीफ़ और सना हो
हमेशा तक खुदावन्द को
हां सिजद: करें आदमज़ाद
खुदावन्द को अबदुलआबाद ॥

१२८ एक सौ अठाईसवां गीत । 8, 7, 4s.

१ वक्त ए रुख़सत बाप दे बरकत
　　मुंजी दे सलामती
ऐ तसल्लीदेनेवाले
　　कर तू मदद अबदी
　　　　बरकत बख़्श दे
　　बाप और बेटे पाक रूह भी ॥

२ जब यहां मुसाफिर होते
　　तू हमारे साथ हो ले
ऊपर भी आसमानी घर में
　　बरकत हमें सदा दे
　　　　सदा सदा
　　प्यार के नूर में रहने दे ॥

१२९ एक सौ उन्तीसवां गीत । L.M.

१ अब आया है आराम का रोज़
खुदा का फ़ज़ल है हनोज़
अब छोड़ें सब दुनयावी काम
और करें दिल से पाक आराम ॥

२ वह जो सलीब पर मुआ था
इतवार में ज़िन्द: हुआ था
आज उस ने मौत पर ज़बर हो
जी उठके छोड़ा क़बर को ॥

३ आज बंद हो दुनयावी कामकाज
खुदा कर फ़ज़ल हम पर आज
कि यह न ख़ाली क़ाइद: हो
पर हमें दिन का फ़ाइद: हो ॥

४ फिर बड़ा सबत एक आवेगा
जहान आराम जब पावेगा
सब मिहनत होगी तब तमाम
और कामिल होगा तब आराम ॥

१३० एक सौ तीसवां गीत।

१ ख़ुदावन्द तेरे फ़ज़ल से
है आज तक हम को ज़िन्दगी
हम सभों को यह ताक़त दे
कि करें तेरी बंदगी
　　ख़ुशी से ख़ुशी से
हम देखते रोज़ ख़ुदावन्द के
ईसा मसीह की ख़ातिर से
गुनाह हमारे बख़्श तू दे
　　ख़ुशी से ख़ुशी से
हम देखते रोज़ ख़ुदावन्द के॥

२ हम जायें तेरी पाक दरगाह
और करें पाक इबादत को
ख़ुदाया हम पर कर निगाह
और हम पर मुतवज्जिह हो
　　ख़ुशी से ख़ुशी से
हम देखते रोज़ ख़ुदावन्द के
ईसा मसीह की ख़ातिर से
गुनाह हमारे बख़्श तू दे
　　ख़ुशी से ख़ुशी से
हम देखते रोज़ ख़ुदावन्द के॥

३ ख़ुदावन्द हम पर ज़ाहिर हो
और सभों को तू कर तग्र्लीम
जो ग़ाफ़िल हों जगा उन को
और अपना दीन फैला रहीम
ख़ुशी से ख़ुशी से
हम देखते रोज़ ख़ुदावन्द के
ईसा मसीह की ख़ातिर से
गुनाह हमारे बख़्श तू दे
ख़ुशी से ख़ुशी से
हम देखते रोज़ ख़ुदावन्द के ॥

४ गर हमें होवे मरने को
ख़ुदाया बख़्श दे यह इनग्राम
कि तुझ पास हमें जाना हो
कि करें तेरी हम्द मुदाम
ख़ुशी से ख़ुशी से
हम देखते रोज़ ख़ुदावन्द के
ईसा मसीह की ख़ातिर से
गुनाह हमारे बख़्श तू दे
ख़ुशी से ख़ुशी से
हम देखते रोज़ ख़ुदावन्द के ॥

१३१ एक सौ एकतीसवां गीत।

१ सब लोग आइयो
खुदावन्द का पाक दिन है
हम जलदी जायें गिरजे को
तुम सब आइयो
कि सुनें हम मुफ़ीद तअ़लीम
और करें ईसा की तअ़ज़ीम
वह है खुदा रहीम
तुम सब आइयो॥

२ बदकार तालिब हों
कि ऐश ओ इशरत करें
खुदा के घर हम जायेंगे
तुम सब आइयो
यह है बेशक मुबारक काम
कि लेवें हम मसीह का नाम
हो उस की हम्द मुदाम
तुम सब आइयो॥

३ हम सोचते रहें
खुदा के पाक कलाम पर
कि उस में है नजात की राह
तुम सब आइयो

नसीहत उस में है सहीह
कि जो सलीब पर था ज़बीह
वह ज़िन्द: है मसीह
तुम सब आइयो ॥

४ उस में लिखा है
कि ईसा ने खुद कहा
तुम लड़कों को सब आने दो
पस सब आइयो
मसीहा तुझ पास आते हैं
तुझ पर ईमान हम लाते हैं
नजात हम चाहते हैं
सब लोग आइयो ॥

१३२ एक सौ बत्तीसवां गीत ।

१ परमेश्वर के अनुग्रह से
हम सभों को है कुशलक्षेम
हे ईश्वर तू यह सामर्थ दे
कि करें तेरा नेम और प्रेम
स्तुति से स्तुति से
इस दिन को मानें प्रभु के
ईसा मसीह के कारण से

सब पाप की क्षमा दान तु दे
स्तुति से स्तुति से
इस दिन को मानें प्रभु के ॥

२ आनन्द से जायें तेरे घर
आराधना करें तेरी ही
हे ईसा हम पर दया कर
निर्बल को बल दे सामर्थी
स्तुति से स्तुति से
इस दिन को मानें प्रभु के
ईसा मसीह के कारण से
सब पाप की क्षमा दान तू दे
स्तुति से स्तुति से
इस दिन को मानें प्रभु के ॥

३ हम सभों का तू शिक्षक हो
और अपना धर्म्म प्रकाशित कर
जो निश्चिन्त हों जगा उन को
तू प्रगट हो सब लोगों पर
स्तुति से स्तुति से
इस दिन को मानें प्रभु के
ईसा मसीह के कारण से
सब पाप की क्षमा दान तू दे
स्तुति से स्तुति से
इस दिन को मानें प्रभु के ॥

४ जो हमें आवे मरनकाल
हम आनन्द रहें और निडर
और जायें तुझ पास दीनदयाल
तू हम पर यह अनुग्रह कर
स्तुति से स्तुति से
इस दिन को मानें प्रभु के
ईसा मसीह के कारण से
सब पाप की क्षमा दान तू दे
स्तुति से स्तुति से
इस दिन को मानें प्रभु के ॥

१३३ एक सौ तेंतीसवां गीत । L. M.

१ अब आई है इतवार की शाम
और आख़िर होता रोज़ आराम
खुदाया तेरे पाक हुज़ूर
मैं शुक्र करता पुरसुरूर ॥

२ तू निअ़मतों को बेशुमार
नित दिया करता हर इतवार
तौ भी मैं ग़ाफ़िल होता हूं
और निअ़मतों को खोता हूं ॥

३ बंदे की सारी भूल गुनाह
बख़्श फ़ज़ल से तू ऐ अल्लाह

ईमान में रूह के असर से
तू मेरे तईं तरक़्क़ी दे ॥

४ कलाम हमारे वाइज़ का
हमारे दिलों में जमा
कि उस का फ़ाइद: ज़ाहिर हो
जमाअत के शरीकों को ॥
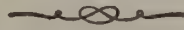
१३४ एक सौ चौंतीसवां गीत। S. M.

१ सवेरे शुक्र हो
खुदावन्द है रखवाल
कल शाम को तू ने सुना था
मुझ आसी का सवाल ॥

२ रात के अंधेरे में
मैं सोया चैन के साथ
मुझे सलामत रखने को
था मुझ पर तेरा हाथ ॥

३ शुक्र हज़ार हज़ार
अब तेरे नाम पर हो
तू दिन भर भी सलामत रख
मुझ आजिज़ बंदे को ॥

४ और जो तू आवेगा
इस दिन में ऐ खुदा
तो फ़ज़ल करके अपने पास
तू मुझे तब उठा ॥

१३५ एक सौ पैंतीसवां गीत । 7s.

१ अब अंधेरा गया है
फिर उजाला आया है
मेरा मन उजाला कर
प्रभु मन को प्रेम से भर ॥

२ पाप की इच्छा आज जो हो
सक्ति दे नाश करने को
ईसा तू सहारा दे
कि मैं बचूं पापों से ॥

३ मन के बुरे सोच मिटा
मुझे जोखिम से बचा
कहीं मुझे तू न छोड़
अपना मुंह न मुझ से मोड़ ॥

४ आवेगा जब मरनकाल
मुझ बलहीन को तब सम्भाल
प्रभु तू है कृपामय
हो उस काल तू मृत्युञ्जय ॥

१३६ एक सौ छत्तीसवां गीत। 8, 7s.

१ तेरी बरकत हम पर आवे
आज की रात खुदावन्दा
बद ख़ियाल और सोच दूर जावे
हाफ़िज़ हो तू ऐ खुदा
गरचि आसपास ख़तरे होवें
गरचि चलें मौत के तीर
ख़ातिरजमअ हो हम सोवें
जो तू होवे ख़बरगीर॥

२ हरचंद होवे रात अंधेरी
हम न छिपे हैं तुझ से
आंख न कभी सोती तेरी
एकसां रात और दिन तुझे
आज की रात में मौत जो आवे
उठें फिर न बिसतर से
काश आसमान पर हर एक जावे
और सआदत में रहे॥

१३७ एक सौ सैंतीसवां गीत। 7s.

१ काम से हाथ उठाता हूं
सोने को मैं जाता हूं

बाप आसमानी ऐ अल्लाह
मेरे ऊपर रख निगाह ॥

२ भूल ओ चूक सब ऐ ख़ुदा
आज के दिन की मुआफ़ फ़रमा
ख़ून मसीह का बेबहा
धोता दिल मुझ आसी का ॥

३ घर के छोटे बड़े सब
सौंपे तेरे हाथ में अब
रह्म करके ऐ रहमान
सब का हो तू निगहबान ॥

४ शिफ़ा बख़्श बीमारों को
दे आराम दु:खयारों को
हर एक जगह ऐ अल्लाह
हो तू अपनों की पनाह ॥

१३८ एक सौ अठतीसवां गीत। L. M.

१ विदाअ के वक़्त ऐ भाइयो
आवाज़ और दिल मिलाइयो
अब पिछली बार ख़ुदा का नाम
एक साथ हम गावें फिर सलाम ॥

२ जो यहां मिलना फिर न हो
तो जानते देस एक बिहतर को
कि भाइयो छोड़के दुख की बात
बिहिशत में होगी मुलाक़ात ॥

सुसमाचार का प्रचार ।

१३९ एक सौ उंतालीसवां गीत । 6, 8s.

१ इंजील का खुश पयाम
सब मुलकों में तुम दो
कि उस का इश्तिहार
हर जगह मअ़लूम हो
आज ही को जान नजात की आन
यह है मक़बूलियत का ज़मान ॥

२ मसीह के सबब से
है यह नजात तैयार
अब सारी दुनया में
हो उस का इश्तिहार
आज ही को जान नजात की आन
यह है मक़बूलियत का ज़मान ॥

३ शैतान की हरकत से
हम हुए बद आमाल
पर हमें ईसा ने
फिर किया है बहाल
आज ही को जान नजात की आन
यह है मक़्बूलियत का ज़मान ॥

४ पस होवे हर कहीं
इंजील का इश्तिहार
हर मुल्क में ज़ाहिर हों
मसीह के ताबेदार
आज ही को जान नजात की आन
यह है मक़्बूलियत का ज़मान ॥

१४० एक सौ चालीसवां गीत । 7, 6s.

१ ग्रीनलेण्ड के मुल्कए सर्द से
और हिंद ओ चीन से भी
और हबश से जहां चशमे
बख़्श देते ताज़गी
दरया मैदान पहाड़ से
हर क़ौम से हर ज़ुबान
लोग मिन्नत कर यह कहते
दिखाओ राह आसमान ॥

२ अलक़ादिर ने बनाए
इनसान बेऐब रास्तकार
शैतान के जाल में आए
सब हुए गुनहगार
वह निअ़मतें हज़ारहा
मसीह से पाते हैं
तौ भी तबाह आवारा
ईमान न लाते हैं॥

३ क्या हम जो रोशनी पाते
और लाखों बरकतें
उन को जो मरते जाते
हयात का नूर न दें
पस खुशी से फैलावें
नजात का खुश पयाम
सब कौमें सुन्ने पावें
ईसा मसीह का नाम॥

४ कलामुलकुद्स फैलाओ
फैलाओ सच्चा दीन
मसीह का नाम सुनाओ
हर जगाह रूए ज़मीन
जब तक वह लौट न आवे
जो बर्रा था पस्तहाल
अपनी बादशाहत पावे
राज करे पुरजलाल॥

१४१ एक सौ एकतालीसवां गीत। 8, 7s.

१ प्रभु ईसा सब संसार में
हो प्रकाश सुसमाचार
देस बिदेस के पापी जानें
कि मसीह से है निस्तार ॥

२ मूरतपूजनेवाले जानें
एक परमेश्वर सच्चा है
एक बिचवाई है प्रभु ईसा
दूसरा मारग कच्चा है ॥

३ और मुहम्मदी यह जानें
कि मनमता है इसलाम
और कमाने अपनी मुक्त को
उन का काम है सब बेकाम ॥

४ अपनी आत्मा को उतारके
लोगों को उजाला कर
भर्म को छोड़ बिस्वास वे करें
प्रभु ईसा तारक पर ॥

१४२ एक सौ बयालीसवां गीत। 8, 7, 4s.

१ सारे जग के महाराजा
तेरे राज की होवे जय

तेरी नीत जो स्थापित होवे
दुष्ट के राज की होती छय
प्रभु ईसा
राज तू करेगा निश्चय ॥

२ धर्म्म और प्रेम का सुसंदेसा
जगत में प्रसिद्ध करवा
जहां वह प्रचारा जावे
अपनी सामर्थ भी दिखा
प्रभु ईसा
अपने राज का तेज प्रगटा ॥

३ दे सब सुसंदेसियों को
हीर और धीर प्रतीत और प्रीत
जिसतें प्रगट हो हर देस में
मुक्त का ज्ञान और भक्त की नीत
प्रभु ईसा
तेरी जय हो जग के मीत ॥

१४३ एक सौ तैंतालीसवां गीत । S. M.

१ हे ईश्वर तेरा नाम
सब जगह हो प्रसिद्ध
कि जानें सब मसीह का काम
और धर्म्म की बुद्ध और बिध ॥

२ कि कैसा महा कर्म
मसीह ने किया है
कमाने जग की मुक्त का धर्म्म
प्राण अपना दिया है ॥

३ अब ईसा का संदेस
और उस का धर्म्म और पुन
प्रचारा जावे देसबिदेस
सब जानें उस के गुन ॥

४ और हम जो तेरे लोग
इस जग के हैं अतीत
हमें संभाल कि तेरे जोग
हम मानें धर्म्म की नीत ॥

मृत्यु और स्वर्गलोक ।

१४४ एक सौ चवालीसवां गीत । 8s.

१ तू पुश्त् दर पुश्त् बरहक़ अल्लाह
हमारी रहा जाएपनाह
जब कि पहाड़ न थे मौजूद
ज़मीन ज़मान न थे नमूद

तू अज़ल से है ऐ ख़ुदा
और अबद तक भी रहेगा ॥

२ जब तू ऐ रब्ब फ़रमाता है
इनसान जहान में आता है
और जिस वक्त बनी आदम को
लौट जाने का फिर हुक्म हो
ज्यों ख़ाक से तू बनाता है
त्यों ख़ाक में फिर मिलाता है ॥

३ तेरी निगाह में साल हज़ार
ज्यों कल के दिन का है शुमार
है पहर रात ही की मिसाल
तेरे नज़दीक हज़ारों साल
इनसान को तू उठाता है
और फिर बहा ले जाता है ॥

४ देख नींद सी है यह ज़िन्दगी
हम सब हैं मानिन्द घास ही की
सबेरे लहलहाती है
और शाम को फिर मुरझाती है
जिस हाल में सब कुछ बेक़रार
ऐ रब्ब तू हमें कर बेदार ॥

१४५ एक सौ पैंतालीसवां गीत । 8, 7s.

१ आदमी धूल है घास का फूल है
  जल्दी वह मुरझाता है
आज वह आता कल वह जाता
  फूल सा जल्द कुम्हलाता है ॥

२ क्या अमीर हो क्या फ़क़ीर हो
  दोनों को मौत आती है
नौजवान को नातवान को
  दोनों वह ले जाती है ॥

३ बाप आसमानी सब नादानी
  दफ़्अ कर दिल मेरे से
तू होशयारी और तैयारी
  आक़िबत की मुझे दे ॥
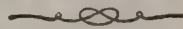
१४६ एक सौ छियालीसवां गीत । 7, 6s.

१ इनसान की देखो फ़ना
  वह फूल सा खिलता है
चन्दरोज़ ख़ाक का बना
  फिर ख़ाक में मिलता है

पर देखो क्या करामत
खुदा दिखावेगा
इस ख़ाक को रोज़ए क़ियामत
वह फिर उठावेगा ॥

२ फ़ना में बोया जाता
उठेगा लाज़वाल
नाक़िस हो गोर में जाता
उठेगा बकमाल
बेइ़ज़्ज़त और जिसमानी
हम बदन बोते हैं
जलाली और रूहानी
वे जिन्द: होते हैं ॥

३ जो अज़ू हैं हक़ीक़ी
मसीह के बदन के
सो ज़िन्दगी तहक़ीक़ी
मसीह से पावेंगे
जो सर हमारा ज़िन्दा
तो अंग भी ज़िन्दा है
मसीह हयात दिहिन्दा
नजात कुनिन्दा है ॥

१४७ एक सौ सैंतालीसवां गीत।

१ एक मुल्क है खुश औ पाक
दूर दूर है दूर
वां लोगों की पोशाक
नूर नूर है नूर
गाते उस में हर आन
ईसा मुंजी है सुलतान
हम करें हर ज़मान
दिल से सुरूर ॥

२ उस मुल्क को जाने को
कौन है तैयार
शक्क क्योंकर लाए हो
क्यों हो बेज़ार
पाक खुशी से मअ़मूर
दुख औ ग़म से होकर दूर
हम ईसा के हुज़ूर
गावें हर बार ॥

३ उस मुल्क में रहते जो
सो हैं खुशहाल
प्यार सब के दिलों को
रखता निहाल

पस आओ जलदी से
ताज ओ राज की शौकत के
ईसा से पावेंगे
पुर पुर जलाल

१४८ एक सौ अठतालीसवां गीत।

१ सैहून आसमानी क्या हसीन
वहां मसीह है तख़्तनशीन
दर उस के सारे मोतिया
वहां की हैकल है खुदा
ईसा जान देके कलवरी पर
खोलता है मेरे वासते दर ॥

२ आसमान हसीन और रौनक़दार
वहां फ़िरिश्ते है नूरदार
गाते खुदावन्द की तौसीफ़
ईसा की हम्द हो और तश्रीफ़
मैं भी आवाज़ मिलाऊंगा
हम्द ओ तश्रीफ़ भी गाऊंगा ॥

३ ताज ज़ीनतदार रास्तबाजों के
धोया लिबास पाक लहू से
ग़ालिबों को है फ़त्हनिशान
पाकीज़ा सब जो हैं वहां

मैं उस की आरज़ू रखता हूं
क्या ही खुशनुमा है सैहून ॥

४ हसीन फ़िरिश्ते खुशइलहान
सदा खुदा के सनाख़ान
उन के सरोद हैं क्या शीरीन
सैहून आसमानी क्या हसीन
देखूंगा वहां ईसा को
हम्द और सिताइश उस की हो ॥

१४९ एक सौ उनचासवां गीत। 11s.

१ आसमान पर आराम है और कुछ नहीं दुख
आसमान मेरा घर है वां पाऊंगा सुख
रूह मेरी ख़ामोश हो और रह तू निडर
दुख आवे तो आवे मैं जाता हूं घर ॥

२ है दुनया की खुशी से नहीं आराम
आसमान की सआदत है पाक और मुदाम
जिस शहर में जाता जलील है और खूब
मैं देखूंगा वहां मसीहए महबूब ॥

३ यह दुनया है जङ्गल वीरान बयाबान
क्यों इसे क़बूल करके खोऊं आसमान

आसमान पर खुदा से है मेरी मीरास
मैं करूंगा वहां मसीह की सिपास ॥

४ जो आवे मुसीबत और ख़तरे और दुख
आसमान पर मुझ दुखी को मिलेगा सुख
जो रंज ओ मुसीबत है इस से क्या ग़म
वह खुशियां पैदा कर रहे हर दम ॥

१५० एक सौ पचासवां गीत ।

१ जल्द मेरे दिन गुज़रते हैं
मैं सफ़र करता जाता
परदेस में होके जा बजा
मैं राह का दुख उठाता
हम खड़े हैं यरदन किनार
और एक एक गुज़र जाता
जलाल उस पार का बग़्ज़े वक्त
इस पार तक नज़र आता ॥

२ मसीह बादशाह फ़रमाता है
मशअ़लें तुम सुधारो
उस पार के मुल्क में अपना घर
हम देखते हैं प्यारो

हम खड़े हैं यरदन किनार
 और एक एक गुज़र जाता
जलाल उस पार का बअ़जे वक्त
 इस पार तक नज़र आता ॥

३ मुसाफ़िरत के दुखों से
 हम भाई हार न जावें
बिहिश्त के सच्चे उम्मेदवार
 उम्मेद का फल भी पावें
हम खड़े हैं यरदन किनार
 और एक एक गुज़र जाता
जलाल उस पार का बअ़जे वक्त
 इस पार तक नज़र आता ॥

४ यहां जो दुख मुसीबत हो
 तो उस को क्यों न सहें
उस पार में अपने बाप के घर
 हम जलदी जाके रहें
हम खड़े हैं यरदन किनार
 और एक एक गुज़र जाता
जलाल उस पार का बअ़जे वक्त
 इस पार तक नज़र आता ॥

१५१ एक सौ एकावनवां गीत।

१ पंख अगर होते तो उड़ जाता दूर
 दूर दूर ही दूर दूर दूर ही दूर
जो काली घटा से छिपता न नूर
 दूर दूर ही दूर दूर दूर ही दूर
फूल हैं उस अदन में सदा बहार
खुश ताजे बाग़ में है पानी की धार
दिल में सब पाक हैं और पोशिश ताबदार
 दूर दूर ही दूर दूर दूर ही दूर ॥

२ दोस्त वहां मिलके न जानेंगे ग़म
 दूर दूर ही दूर दूर दूर ही दूर
एक घर रहेंगे एक दिल हो हर दम
 दूर दूर ही दूर दूर दूर ही दूर
सोने का शहर और नदी शफ़ाफ़
 मोती के दर से जलाल है क्या साफ़
करने बयान से जुबान है मुआफ़
 दूर दूर ही दूर दूर दूर ही दूर ॥

३ सुनो क्या गाते हैं बरबतनवाज़
 आओ जल्द आओ आओ जल्द आओ
दुनया है फ़ानी जल्द होगी गुदाज़
 आओ जल्द आओ आओ जल्द आओ

आओ बाप के घर में मकान है तैयार
साथ हो उस दोस्त के जो है वफ़ादार
गाओ वह गीत जिस को दिल करे प्यार
आओ जल्द आओ आओ जलद आओ॥

१५२ एक सौ बावनवां गीत।

१ यहां मुसाफ़िर हूं
घर है आसमान
सरा में टिकता हूं
घर है आसमान
दुनया के दरमियान
दुख है और रंज हर आन
घर मेरा है आसमान
हां घर आसमान॥

२ यहां हूं बेमकान
पर घर आसमान
छोड़ूं यह बयाबान
जाऊं आसमान
यहां के खौफ़ ओ डर
दूर होंगे सरासर
जब चलूं अपने घर
वह घर आसमान॥

३ वहां मसीह के पास
घर है आसमान
खुश हूंगा न उदास
घर है आसमान
वहां सब लोग हैं पाक
उन की सुफेद पोशाक
आसमान पर सब बेबाक
घर है आसमान ॥

१५३ एक सौ तिरपनवां गीत।

१ किधर जाते यात्री लोगो
किधर जाते किये भेस
जाते हम एक दूर की यात्रा
पाया राजा का आदेश
जङ्गल पर्बत दुख उठाते
उस के भवन को हम जाते
जाते हैं एक उत्तम देश ॥

२ क्या पाओगे यात्री लोगो
जाके दूर के उत्तम देश
उजले बस्त्र तेज के मुकुट
प्रभु देगा प्रेम बिशेष

निर्मल अमरितजल पियेंगे
ईश्वर पास हमेश रहेंगे
जावें जब उस उत्तम देश॥

३ छोटा झुण्ड हो तुम न डरते
कठिन मार्ग में सूने देश
नहीं पास हैं दोस्त अंदेखे
स्वर्गी दूत टाल देते क्लेश
ईसा स्वामी साथ चलेगा
रक्षक अगवा आप रहेगा
जाने में उस उत्तम देश॥

४ यात्री लोगो हम भी साथ हो
चलें उज्जल उत्तम देश
आओ सही भले आए
बीच हमारे हो प्रवेश
आओ संग न छोड़ो कभी
ईसा नाथ तैयार है अभी
लाने को उस उत्तम देश॥

१५४ एक सौ चौवनवां गीत। 10s.

१ खुशी कर खुशी कर होके शादमान
चलें हम घर को वह घर है आसमान

ईसा मुनज्जी खुद कहता है आ
खुशी कर खुशी कर घर को तू जा
जल्दी तमाम सफ़र होगा ज़रूर
जल्द जाना होगा खुदा के हुज़ूर
फिर जो मसीह पर हम लाए ईमान
खुश होके अपने घर जाते आसमान ॥

२ उस पार जो पहुंचे सो करके निगाह
खड़े हैं देखते हम लोगों की राह
गाके पुकारते हैं आओ निडर
खुशी कर खुशी कर आओ तुम घर
गाना बजाना है वहां शीरीन
सादिक़ लोग छेड़ते हैं बरबत और बीन
कैसा दिलकश है आसमानी दियार
खुशी कर खुशी कर चलें उस पार ॥

३ मौत हम को मारे तो क्या है परवा
ईसा के हाथ हम सलामत सदा
ईसा ने खोया है क़बर का डर
खुशी कर खुशी कर चलें हम घर
मौत का डंक टूटा जी उठा मसीह
नूर उस जहान का हम देखें सरीह
देखेंगे अपना आसमानी मकान
खुशी कर जाते घर घर है आसमान ॥
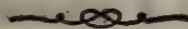
१५५ एक सौ पचपनवां गीत । C. M.

१ यरूसलम ऐ शहर पाक
  अज़ीज़ है तेरा नाम
मैं तुझ में कब पहुंचूंगा
  और पाऊंगा आराम ॥

२ तेरे दरवाज़े मोती हैं
  दीवारें हैं बुलंद
सड़कें हैं ख़ालिस सोने की
  और शहर दिलपसंद ॥

३ तेरी बारगाह शाहाना में
  मैं पहुंचूं किस आन
इबादत वहां दाइम है
  और सबत है हर ज़मान ॥

४ तू अदन से खुशनुमा है
  हमेशा खुशबहार
यरूसलम का दूर ही से
  मैं करता हूं दीदार ॥

५ पस रंज औ मौत से डरूं क्यों
  क्यों होऊं मैं हैरान
मुझे तो घर को जाना है
  घर मेरा है आसमान ॥

६ रसूल शहीद और नबी लोग
वां हैं मसीह के गिर्द
और उन में मिलने जाते हैं
मसीह के सब शागिर्द ॥

७ कब मुझे मिलेगा आराम
और कब तसल्ली हो
जब देखूंगा यरूसलम
जाए तजल्ली को ॥
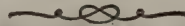
१५६ एक सौ छप्पनवां गीत।

१ मेरे वतन पुरजलाल में
बाक़ी रहा है आराम
ईसा वहां आगे गया
करने को तैयार मक़ाम
थके को वां आराम है
थके को वां आराम है
थके को वां आराम है
तुम को है आराम
उस मुक़द्दस मुल्क मौऊद में
खुश फ़िरदौस के दियार में
जां हयात का दरख़्त् फूलता
तुम को है आराम ॥

२ जो मकान तैयार वह करता
बाक़ी रहेगा मुदाम
अपने मुंजी पास पुरखुशी
रहूंगा मैं बदवाम
थके को वां आराम है॥

३ उस मुबारक मुल्क में मौत का
होवेगा न नाम निशान
उस के मुंतज़िर हम गावें
रब्ब की सना हर ज़मान
थके को वां आराम है॥

१५७ एक सौ सत्तावनवां गीत।

१ यहां दुख हम सहते हैं
मिल एक साथ न रहते हैं
बिहिश्त है मेल को जा
तब हम करें खुशी
खुशी खुशी खुशी
जब हम सब ही मिलके
जुदा फिर न होवेंगे॥

२ सब जो चाहते ईसा को
सो जब उन का मरना हो
बिहिश्त को जावेंगे
तब हम करें खुशी॥

३ खुशी तब मनावेंगे
जब हम देखने पावेंगे
मसीह को तख़्तनिशीन
तब हम करें खुशी ॥

४ तब एक दिल और एक ज़ुबान
गावेंगे हम हर ज़मान
खुदावन्द की तश्रीफ़
तब हम करें खुशी ॥
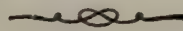
१५८ एक सौ अठावनवां गीत। भजन

यीशु मसीह मेरो प्रान बचैया।
जो पापी यीशू कने आवे . यीशू है वाकी मुक्त करैया ॥
यीशु मसीह को मैं बलि बलि जैहूं . यीशू है मेरो त्रान करैया ॥
गहिरो वह नदिया नाव पुरानी . यीशू है मेरो पार करैया ॥
दीननाथ अनाथ के बन्धू . तुम्ही हो प्रभु पाप हरैया ॥
आसीकोअपनी शरनमें रखियो . अंतसमैमेरीलीजेखबरिया ॥

१५९ एक सौ उनसठवां गीत। पूर्बी

हो प्रभु अब करहु छेम . हौं गुलाम तेरो ॥
बार बार घटी भई . चूक भई घनेरो।

आए अब निकट तोर . मोर ओार हेरो ॥
यीशु बिदित तोहि नाम . स्वामी तुम मेरो ।
कौन पास दास जाय . कोह कौन केरो ॥
त्रास युक्त जोरि पानि . अनुतापित टेरों ।
एक बेर मोहि ओार . करन अपन फेरो ॥
लीजिये उबारि मोहि . कठिन काल घेरो ।
जान अधम सीस नाय . पड़त चरन तेरो ॥

१६० एक सौ साठवां गीत । पूर्बी

हो प्रभु अब करहु पार . बुड़त नाव मेरो ॥
काम लहर उठत तुन्द . क्रोध पवन जोरे ।
लोभ भैार घुमत ठैार . मोह सघन घोरे ॥
तनुक नाव माटि भाव . सहज गलत सोरे ।
माझ धार झपट धरत . काल मगार दोरे ॥
यीशु नाम जगत ख्यात . लोक जपत जोरे ।
ताहि पच्छ निमित मोर . द्रवहु नैन खोरे ॥
केते तुम तारि लियो . देरि मोहि ओारे ।
सुमरि तोहि अधमजान . प्रान दीन्ह छोरे ॥

१६१ एक सौ इकसठवां गीत ।

मसीह जी को सुमरो भाई, तुम सरगधाम सुख पाई ॥
सुमरन कीजे चित में लीजे, सत्य शीलता पाई ।
आनन्द है के जय जय कीजे, अन्तर ध्यान लगाई ॥
यह ज़िन्दगानी फूल समानी, धूप पड़े कुम्हलाई ।
अवसर चूक फेर पछितैहो, आख़िर धक्का खाई ॥
जो चेते सो होत सवेरे, क्या सोचे मन लाई ।
कुल परिवार काम नहि आवे, प्रान छूट छिन जाई ॥
सत्य पदार्थ खीष्ट जग आये, सब पापी अपनाई ।
निहचल बासकरो निश बासर, अमर नगर को जाई ॥
अन्तर मैल भरो बहु भारी, सुधि बुधि में बसराई ।
यीशु नाम की बिनती कीजे, अवगुण में गुण पाई ॥

---

१६२ एक सौ बासठवां गीत । पूर्वी

प्रेम सहित मन हमार, यीशू गुन गाउरे ॥
प्रेम के प्रताप पाप, दूर हो दुराउरे ।
प्रेम सहित गुनन गाय, अमर फलनि पाउरे ॥
प्रेम सों प्रबल नाहीं, कछुक दृष्टि आउरे ।
बिषय बंध काटि तुरति, मुक्तिहि अपनाउरे ॥

प्रेम बोहित चढ़ि मना . भवहु पार जाउरे ।
प्रेम अस्त्र बांधि शत्रु . महानहु हराउरे ॥
प्रेम फलनि धर्म ग्रन्थ . बार बार गाउरे ।
प्रेम सदन सुखद सकल . जान सर्ब टांउरे ॥

१६३ एक सौ तिरसठवां गीत। भजन

हे प्रिय बालक काया तुमरी . कौन दयाल बनाई ॥
हड्डी जोड़ कियो जनु ढांचा . ऊपर मांस भराई ।
सुन्दर चाम सुकोमल मढ़िके . रग रग रुधिर चलाई ॥ १
श्वास लियत अरु डोलत बोलत . गात भयो सुखदाई ।
अति निर्बल है काया तौहूं . तामें प्रान बसाई ॥ २
जले अगिन में जल में डूबे . शस्त्रनतें कटि जाई ।
कौन रच्यो यह कौन संभालत . पल पल कौन सहाई ॥ ३
हे प्रिय देह रची परमेश्वर . निश दिन पालत ताई ।
बिनतो अस नित तासों करिहो . हे प्रिय राखु बचाई ॥ ४

१६४ एक सौ चौंसठवां गीत। सवैया

दिव आसन सन्मुख ईश्वर के.
शत कोटिन पावन दूत खरे हैं ।

मनभावन पावन शब्दनतें.
　　प्रभु के यश गान सप्रेम करे हैं ॥
नहि शोक न रोग न रोदन है.
　　तिन को नहि भै नहि रात परे है ।
धरि ज्योतिस्वरूपक ध्यान सदा.
　　चित शुद्धहि मोद हुलास भरे हैं ॥　१

करि प्रीति मनुष्यनसों चहते.
　　सब को स्वरलोकहि लें पहुंचाई ।
महि आय करें प्रभु आयसुतें.
　　धरमी जन को उपकार भलाई ॥
लघु बालक वा प्रभु भक्त कऊ.
　　जब देह तजे जिमि यीशु बुलाई ।
तिहि आतम को सुख धाम बिषे.
　　अहलादित दूत लिवाय बसाई ॥　२

१६५ एक सौ पैंसठवां गीत । भजन

ईश्वर महिमा ध्यान करो मन . सुखदायक बिस्तारा ॥
आदौ गगन माहिं परमेशा . तेजस जोत पसारा ।
रैन दिना शशि सूर बड़ाई . करहीं नित परचारा ॥ १

जलचर बनचर नभचर जोई . कोटि कोटि संसारा।
तिनहि खोलि कर जगपति दाता . सब दिन देत अधारा॥ २
निरमल नीर दूरतें लाई . सघन मेघ के द्वारा।
सूखे भूतल पर बरसावत . जातें हो हरियारी॥ ३
अन्न अनेक रसिक फल नाना . स्वादित बहु परकारा।
प्रभु प्रतिदिन सब जग उपजाई . करत महा भंडारा॥ ४
आश्रित अधम कहांलग गावे . ईश्वर शक्ति अपारा।
परमानन्द कन्द गुन माना . हे मन बारम्बारा॥ ५

१६६ एक सौ छियासठवां गीत। तोटक छन्द

अपराध कियो जब आदम ने.
उपजे महि कंटक पेड़ घने।
तन धूलहि की जनु धूल भई.
तेहि आतम सदगति आस गई॥ १

अभिमान किये पर दूत गिरे.
कबहू नहि सो सुखधाम फिरे।
नर आयसु भंग कियो जबही.
किमि ताहि न दंड पड़े तबही॥ २

तउ आदि समै जे उपाय रचे.
नरकानलसों नर जासुं बचे।
तेहि प्रेम निधान निबाह लियो.
अघ औगुन औषधि थाप दियो॥ ३

सुत आपन को जगदीश कहा,
अघ कारन होवहि हानि महा ।
पृथिवी तुम जा नरदेह धरो,
नर तारन कारन दंड भरो ॥ ४

एहि प्रेमहि कौन बखान करे,
पितु पुत्र दियो दुख पाप हरे ।
सुत जो करुना करि लीन्ह व्यथा,
करि कौन सके तेहि योग्य कथा ॥ ५

१६७ एक सौ सतसठवां गीत। छन्द

मरियम कुंवारी ज़बरयेल सतेज दर्शन पायके ।
परनाम सुनि दिव दूत के भइ सोच बश अकुलायके ॥ १
नहि मर्म जान्यु दूत शुभ सन्देश केहि बिधि लावही ।
नर मुक्तिदायक तोर सुत अति दीन बनि अब आवही ॥ २
जगदीश जे बर बचन ठान्यो सुत पठाउब मैं मही ।
सेइ बाक्य अपनो सत्य स्वामीनाथ बदलि दयो नहीं ॥ ३
बहु काल व्यापे शोक अरु सन्ताप पृथिवी के बिखे ।
जब अवधि पूरी तब कियो जिमि भबिख ग्रन्थहिथे लिखे ॥ ४
दाउद नरेशक बंश में मरियम रही निरधन बड़ी ।
तेहि शुद्ध मन्या पाहि जगकरतार देह बिमल धरी ॥ ५
अस दीन कन्या पर दया अदभुत दिखाई प्रभु यथा ।
नित प्रीति करही दीन दुखित बिनीत मनुखन पर तथा ॥ ६

१६८ एक सौ अठसठवां गीत । भजन

गनक गन पूजन आये जगराई

पूर्ब दिशा तें पूछत आये . नक्षत्र के अनुजाई ।
यिहुदिन के भूपाला कौने . कहां जन्म के ठांई ॥ १
जो तारा देख्यो दिग पूरब . सोइ चले अगुआई ।
थगित भये आये गृह ऊपर . जन्म यीशु जहं पाई ॥ २
निरखि तारा भूरि हरखाने . जिमि लोभी धन पाई ।
समीप आये दंडवत कीन्हा . दरशहि नैन जुड़ाई ॥ ३
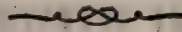
१६९ एक सौ उन्हत्तरवां गीत ।

१ हज़ारों लड़के खड़े हैं
खुदा के तख़्त् के पास
गुनाहों से मुबर्रा हैं
और करते हैं सिपास
गाते सना सना हो
सना होवे बर्रे को ।
होशन्ना होशन्ना होशन्ना होवे बर्रे को
गाते सना सना हो
सना होवे बर्रे को ।
होशन्ना होशन्ना होशन्ना हो खुदावन्द को ॥

२ आरास्ता सब सुफ़ेद लिबास
    पहिन के खड़े हैं
बादशाहत उन की है मीरास
    अब खुशी करते हैं
गाते सना ॥

३ यह लड़के क्योंकर उस मकान
    और चैन में रहते हैं
क्या सबब है कि वह आसमान
    और नूर में बसते हैं
गाते सना ॥

४ खुदावन्द ने बहाया है
    अपना बेशक़ीमत खून
पाकीज़ा उन्हें किया है
    इस लिये वह ममनून
गाते सना ॥

५ वह लड़के करते थे प्यार
    मसीह मुबारकज़ात
आसमान में अब वह है ताजदार
    नूरानी और दिलशाद
गाते सना ॥
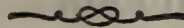
१७० एक सौ सत्तरवां गीत ।

१ ऐ सिपाही हो दिलावर
जंग में जो मश्गून
मदद पास है और हमारी
फ़त्ह बिलयक़ीन
हो मरदाना योशू कहते
कि मैं हूं नज़दीक
हम दिलेर हैं कर इनायत
फ़ज़्ल की तौफ़ीक़ ॥

२ देख एक फ़ौज जोरावर आती
और सरदार शैतान
हम शुमार में कम हो जाते
दिल है हिरासान
हो मरदाना ॥

३ देखो फ़त्ह की निशानी
झण्डा ए सलीब
बिस्मिल्लाह शिकस्त हम देंगे
दुशमन ए मुहीब
हो मरदाना ॥

४ कितनी तेज़ और सख़्त लड़ाई हो
मदद है नज़दीक
पेशवा आता हिम्मत बांधो
यारो हो वसीक़
हो मरदाना ॥

१७१ एक सौ इकहत्तरवां गीत।

१ मेरा छोटा बाबा
जलदी से सो जा
तू है प्यारा बच्चा
अपनी मामा का ॥

२ आंखें भारी हुईं
उन्हें बंद कर ले
सोजा मेरा बच्चा
निश्चिन्ताई से ॥

३ तू तो सो जायेगा
मामा जागेगी
ऐसा तू न जान्ना
मामा भागेगी ॥

४ मामा से भी बड़ा
एक है तेरे साथ
ईसा तेरे ऊपर
रखता अपना हाथ ॥

५ उस के स्वर्गी दूत भी
अब हैं तेरे पास
लड़कों को बचाने
हैं वे उन के दास ॥

६ मेरी आंख की पुतली
बच्चा मत घबरा
जलदी आंखें मूंद ले
जलदी सो तू जा ॥

१७२ एक सौ बहत्तरवां गीत।

१ ज़ात पात का फ़र्क़ जो मानते हैं
उन्हें नादान हम जानते हैं
ख़ुदा से न वह आया है
सिर्फ़ आदमी का बनाया है ॥

२ हां ब्राह्मन बन्या और चमार
और कोली तेली और कुम्हार
राजपूत और काइथ और दोसाद
सब हैं इनसान सब आदमज़ाद ॥

३ एक ही मा बाप के आदमज़ाद
हैं आदम हव्वा की औलाद
मा बाप तो एक और अनेक ज़ात
यह कैसे कहूं ज्ञान की बात ॥

४ ज़ात जानवरों में है ज़ुरूर
एक भालू है एक है लंगूर

बैल गधा घोड़ा गिद्ध और चील
छुछूंदर मक्खी ऊंट और फ़ील ॥

५ किसी को पर किसी को बाल
एक ऐसा एक को वैसा खाल
एक को है सींग एक को है दुम
एक को है पंजा एक को सुम ॥

६ पर आदमियों की फ़र्क फ़र्क ज़ात
उन में है कहां ऐसी बात
दुम सुम खाल बाल का फ़र्क जो है
न ब्राह्मन न चमार को है ॥

७ पर एक ही ज़ात है भाईयो
खुदा की सना गाईयो
यह उस के रह्म की है बात
कि हमें दी इनसान की ज़ात ॥
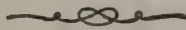
१७३ एक सौ तिहत्तरवां गीत ।

१ क्या तू थक और हार भी जाके
 अति दुखी है
एक यों बोलता मुझ को आके
 खुशी ले ॥

२ क्या मैं उस के चिन्ह पहचानूं
जो वह आगया हो
पांव हाथ पसली में देख भाई
उस के घाव॥

३ क्या वह राजा हो के सिर पर
ताज पहिनता है
हां सचमुच एक ताज वह रखता
कांटों से॥

४ उसे पा जो पीछे चलूं
वह बखश देगा क्या
अति दुख और मिहनत अति
और रोना॥

५ जो नित्य उसे ग्रहण करूं
क्या है आख़रकार
दुख और मिहनत से छुटकारा
यरदन पार॥

६ जो यों मांगूं मुझे ले तो
क्या वह बोले न
उस से पहिले जग आसमान भी
टल जावें॥

७ पा होले और मिहनत करके
आशीष पाऊंगा
दूत और संत और आगमज्ञानी
बोलते हां॥

१७४ एक सौ चौहत्तरवां गीत।

एक द्वारा खुला रहता है
कि जिस से सदा आता
एक नूर जो क्रूस से फैलता है
मसीह का प्रेम बतलाता
क्या यह हो सकता प्रेम अपार
कि खुला रहा मुक्त का द्वार
कि मैं कि मैं
कि मैं प्रवेश करूं

सबहों पर खुला है वह द्वार
जो उस से मुक्ति चाहते
हर ज़ात हर क़ौम धनवान लाचार
मुक्त उस में पहुंच पाते वग़ैरा

पस आगे जा निडरी से
कि अब द्वार खुला रहता
सलीब उठा वह ताज जीत ले
जो प्रेम अपार बख़श देता वग़ैरा

सलीब जो मिला है यहां
हम यरदन पार छोड़ देंगे
मसीह से पाके ताज वहां
नित उस का प्रेम करेंगे वग़ैरा ॥

गीतों की फिहरिस्त ।

तीन दुआएं।

पहिली।

मैं दुआ मांगता ऐ खुदा
सवेरे सुबह को
कि मेरा बोल और मेरी चाल
आज तुझे पसन्द हो॥

दूसरी।

मैं अब सो जाता ऐ खुदा
मुझे हर आफ़त से बचा
और जो मैं मरूं आज की रात
तो मेरी रूह को दे नजात॥

तीसरी।

ऐ ईसा मेरे दिल ही को
अपने पाक लहू से तू धो
मुझे बचा बुराई से
और रूहुलकुदस तू मुझे दे॥